हमर टोल

राजदेव मंडल

श्रुति प्रकाशन
दिल्ली

ISBN : 978-93-80538-78-5

मूल्य : भा. रू. २००/-
पहिल संस्करण : २०१२

श्रुति प्रकाशन
रजिस्टर्ड ऑफिस : ८/२१, भूतल, न्यू राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली-११०००८. दूरभाष- (०११) २५८८९६५६-५८
फैक्स- (०११) २५८८९६५७
Website : http://www.shruti-publication.com
e-mail : shruti.publication@shruti-publication.com
Printed at : Ajay Arts, Delhi- ११०००२
Typeset by : Sh. Umesh Mandal.
Distributor :
Pallavi Distributors, Ward no- ६, Nirmali (Supaul), मो.- ९५७२४५०४०५, ९९३१६५४७४२
Hamar Tol : A Maithili Novel by Rajdeo Mandal.

आमुख-

कल्प, यर्थात, स्वप्नक तल
माछक जालमे लोक फँसल
माछ पुछैत अछि- की यौ भाय?
लोक कहैत- किछु कहल ने जाए।
हमरे हाथसँ जाल बनल
हमरेपर अछि आब तनल।

समस्त मिथिलांचल

कैँ

समरपित...

सुधी पाठक वृंद-

सम्मुख ठाढ़ छी लऽ कऽ सुमन
शत-शत नमन
शत-शत नमन।

आभार-

श्री गजेन्द्र ठाकुर एवं उमेश मण्डलजी
संगहि श्रीमती नीतू कुमारी आ नागेन्द्र कुमार झा जीक प्रति
आभार।

१

(नाओं, स्थान, घटना आदि कल्पनापर आधारित अछि।)

पूर्वरूप : (क)

अहाँ ऐ वसुंधराक कोनो कोनपर छी। ई हमर आत्मविश्वास कहि रहल अछि। अहाँक नै देखितो हम देखि रहल छी। अहाँक उपस्थितिक ज्योत्सना हमरा चारूभर आभासीन भऽ रहल अछि। आर ओइ ज्योतिसँ हमर रोम-रोम पुलकित भऽ रहल अछि। हमहूँ तँ ओइ नृत्यलीलाक अंश छी।

हम बुभुक्षित छी अहाँक सिनेह आ आशीरवादक लेल।

हमरा क्षमा नै करब तँ दण्ड दिअ। किन्तु बिसरू नै। यएह कामना अछि।

अहाँक स्मरण कऽ किछु रचबाक प्रयत्न कऽ रहल छी।

❍❍❍

(ख)

विशाल सागरक पसरल जलपर धनुकटोली ठाढ़ अछि। की ओ हँसि रहल छै? आकि कानि रहल छै?

लगैत अछि जेना रंग-बिरंगक जलमे ओ उगि आएल अछि। चारूभर उड़ैत सुगन्धित धुइयाँ। मुँह आ देहमे लटपटाइत बादल जकाँ कारी आ उज्जर धुइयाँ। आ लगैत छै जे ऊ आकृति रसे-रस बढ़ि रहल हो। गाम-नगर-महानगर सभटा आकृतिक भीतर ढुकल जा रहल हो। नजरिक जे एकटा बिस्तार होइ छै, सेहो जेना ओकरा सोझहामे छोट भेल जा रहल छै। ओकरा निसाँससँ निकलैत हवा, बुझाइ छै जेना बिहाड़ि बहैत हो।

बहुत गोटे जेना एक्के बेर जय-जयकार केलक। मथापर जटा, अधपक्कू दाढ़ी-मोछ, लाल कुंडाबोर आँखि हाथमे बड़कीटा शंख नेने एकटा बाबाजी देखाए पड़ैत छै। ओकरा आँखिसँ लहू बहि रहल छै।

हवाकेँ कंपित करैत गम्भीर वाणी निकलैत अछि-

"दैविक दैहिक भौतिक ताप...।"

आकास फाड़ैबला शंखनादसँ आगूक शब्द झपा गेल। संगे बाबा महतोकेँ जय-जयकार हुअ लगल।

धनुकटोली शनैः शनैः जलमे समा रहल अछि। ओइ स्थानपर उगैत छै- एकटा छोटका टोल। जेना हमर टोल। छोट-पैघ, नीक-अधलाह घर-दुआरि। हँसैत-कानैत लोक-वेद, धिया-पुता, माल-जाल, चिरइ-चुनमुन्नी, सुखल आ हरियर- गाछ-बिरिछ, पोखरि, इनार गली, सड़क, चौबटिया। की ई सपना छी आकि सत्य...। आकि सत्यक सपना?

❍❍❍

२

गहवर घर हल्ला कऽ रहल अछि। सघन अन्हार कान ठाढ़ केने सुनि रहल अछि। गिरहतबाकँ ईंटाबला घरपर बैसल इजोत हनहना कऽ हँसैत अछि। हँसी अन्हारमे छिड़िया जाइत अछि कन्तु अन्हारमे छिड़िआएलो इजोत भकजोगनी जकाँ भुकभुकाइत अछि। हड़हड़ाइत हवा आ ओकरा कान्हपर चढ़ल भगैतक स्वर दड़बड़ मारि रहल अछि- सौंसे टोल।

“केतेक दूर रहलह हौ सेवक-राजा फुलबरिया हौ...। एके कोस रहलह हौ सेवक राजा फुलबरिया हौ...। लगि गेल चौदहम केवाड़ हौ...।”

ताल काटैत मिरदंग आ झनकैत झाइल। भगैतया सभ गाबैसँ बेसी देह मचकाबैत अछि। जेना देह नाचैत अछि टाँग नै। साज-बाजक तालपर नाचैत देह आ मन।

गहवरक पछुआरमे अन्हार खटखटा रहल अछि। ऊ अन्हार नै भूत प्रेतक छाँह छिऐ। नेंगरा बुढ़बा कहैत रहै छै। रौ गहवरक देवी-देवताक डरे सभटा साहन सभ पछुआरमे नाँगटे नाचैत रहैत छै। वएह सभ कखनो काल नढ़ियाकँ कान पकड़ि केंकिया दैत अछि- भूउउऊ...। ओकरे सुरमे सुर मिला कऽ भूत प्रेत कानए लगैत अछि- कुउउऊ...। तखनि टोलक लोक भलहिं सुटैक जाइ किन्तु कुताकँ देखि लियौ ताल। जना नाँगरिपर कियो मटिया तेल ढारि देने होइ।

गहवरक आगू सौंसे अँगनीमे दीया जरि रहल अछि, गोल-गोल पाँतिमे। अन्हरियाकँ गरदनियाँ दऽ भगा रहल अछि। तैयो उ थेथर जकाँ दोग-दागमे ठाढ़ रहैए चाहैत अछि। हे एकोटा दीपक टेमी निच्चाँ नै हो।

हँ... हँ एहेन बखतमे भकइजोत बड़ड खराब। डाइन आ भूत केनौ सँ लपकि सकै छौ। अपन-अपन सतरकी। घटलासँ पहिने दीपमे तेल ढारैत रह।

पता छह तेल केते डहतै। महगाइ तँ आसमानमे भूर कऽ देने छै। ओइ कारणे तँ सभकँ भकभकाइते छै।

यएह तेल जरे केकरो फटै छै एकरो...।

झकाश इजोत देखैक छौ तँ देखही शहर जा कऽ। राइतोमे सड़कपर गिरल सुइया ताकि लेबही।

भगतकँ कोनो कम पामर होइ छै। चाहतै तँ ऐ गाछो सभमे इजोत जरए लगतै।

अच्छा चुप। बड़का लाल बुझक्कर भऽ गेलँ।

हम नै अहाँ बड़का विदुआन।

अहाँ चुप रहू। एम्हर देखू।

खेलाबन भगत पूजा ढारि रहल अछि। खीर, लड्डू, पान, सुपारी, तुलसी, गंगाजल सभटा डाली सभमे सजाएल छै। मनक तरजूपर तौल कऽ अछत-फूल रखि रहल अछि। सभटा पूजाकँ कुड़ि एके रंग एके आकार। भगत जखनि लिहुरि कऽ पूजाकँ कुड़ि रखैत छै तखनि ओकर पेट बोमिया उठै छै।

“गै माए, भगत पेटमे बाघ रखने छै। देखै छीही हुमड़ै छै।”

“गै दाइ, देवतो-पितर नै बुझै छौ। तोहर बेटी तँ जुगमे भूर करतौ। अखनि तँ पा-भरिक छौ।”

हे मुँह सम्हारि कऽ बाजू। अपन बेटी जेना बड्ड सतबरती। कोन-कोन रसखेल केलक के नै बुझलक।

हे लबरी...।

हे चुप...। झगड़ा-झाँटी बन्न। पहिले कहलौं औरतिया सभकँ एक कात आ पुरूष सभकँ एककात बैठाएल जाए।

हँ-हँ सएह कएल जाए।

आइ गहवर घरमे पहिलुक डाली जागेसरकँ लागल अछि। ओकरा स्त्रीकँ कोखिया गोहारि हेतैक। ओकरा देहपर कखनौ भूत सवार भऽ जाइत अछि आर उ खेलाए लगैत अछि।

केना भूत सवार नै हेतै? धर्मडीहीवालीकँ देहो तँ सवारीकँ जोग अछि। भरल-पूरल जवानी, श्याम वर्ण, तेलसँ छट-छट करैत देह,

खलिआएल आँखि, गोल बाहिंपर कसल अँगिया। कारी भौंरा केश। आँखिकेँ जेना स्वत: खैंच लैत अछि ओकर देह।

एकर ठीक उनटा जगेसराक शरीर। जेना जुआनीमे घुन लगल हो। तहिना ओकरा देहकेँ बिमारी अधखिज्जु कऽ देने अछि। कमजोरीक कारणें तामस हरदम नाकेपर चढ़ल रहैत अछि। तैपर सँ बाल-बच्चा नै होइ छै। तामस आर दुगुना। ई सभटा तामस उतारत धर्मडीहीवालीपर। कखनो फनकए लगैत अछि-

''सन्तानक मुँह केतए देखिते ई पपिआही। जीनगी भरि तँ कुकरम केने अछि।''

धर्मडीहीवालीकेँ भरि देह ई बात छूबि लैत अछि। अपन असल नाओं निरमला जेकरा उ नैहरमे रखि कऽ आएल अछि। अपना नैहराक बड़ाइ चिबा-चिबा करए लगैत अछि-

''हमरा धर्मडीहीकेँ लोक असल धर्म-कर्म करैबला सभ अछि। पपिआहा सभ तँ अहीठाम भरल अछि।''

दिन, दुपहर, राति कखनो दुनू बेकैतमे बकटेटी शुरू भऽ जाइत अछि। टोलक बूढ़-सुरकेँ अनसोहाँत लागब स्वभाविके। जगेसराकेँ किछो तँ कहऽ पड़तै-

''हे रौ, नै होइ छौ तँ ओझहो-धामिकेँ देखाबहि। कोनो धरानी एकोटा बाल-बच्चा भऽ जेतौ तँ बुझही जे सभ दुख पार। ई भूत-देवी आ तामस-पित सभटा एकरा देहसँ भागि जेतौ।''

''सन्तान लेल तँ कोखिया गोहारि करबै पड़तौ।''

केतेक दिनसँ जागेसर गोचर विनतीमे लगल अछि। किन्तु भगत पिघलत तब ने। भगतकेँ छुट्टी कहाँ रहै छै। आइ ऐ गाम तँ काल्हि दोसर गाम। नोते-नत।

आखिर पक्का भगत छिऐ रामखेलाबन। दू पीढ़ीसँ ओझहा-धाइमक काज कऽ रहल छै।

पहिने ओकरा गहवरमे गछौटी करियौ। साफ-साफ कहियो पूजामे केतेक खरच करबै। पाठीक बलि देबै। गछि लियौ। तब भगत तैयार हएत।

केतेक खुशामदे आइ तैयार भेल अछि खेलाबन भगत।

❍❍❍

३

गहवरक अँगनीमे जेना ललका इजोत उतरि गेल छै। अन्हारक कोरामे लहुआएल लाल चिल्हका खेला रहल हो, तहिना सन लगैत अछि।

धधकैत आहुत, चौमुख जरैत दीप, अड़हुलक लाल फूल, लाल सिनूर, ललका डाली। सबहक मुँह जेना ओही लालीसँ ढौंरल हो। लाल टुह-टुह भेल भगतकेँ आँखि सपनामे डूबि-उगि रहल हो। पहिले कहि देल गेल छेलै। मरद सभ एककात आ औरतिया सभ एककात। बात के सुनतै? ढीठ सभ मरदक झोंझिमे ढुकि कऽ बैसल छै।

दोसरो दिस तँ थेथरे सभ अछि। मौगियाह जकाँ दोगमे ढुकि कनफुसकी कऽ रहल छै।

पता नै चलै छै औरत आ मरदक। एक तँ इजोत तेजगर नै छै। दोसर साड़ीसँ आधा मुँह झँपने छै। आँखिक भाग देखलासँ केना चिन्हत लोक। दसगरदा जगहपर सभ चलै छै।

सभ की चलतै। उतरबरिया कातसँ औरतिया सभकेँ नै बैठबाक चाही। उत्तरसँ देवताक आवाहन होय छै। गियान तँ छौ नै।

आबि गेलौ सुंघहा धान।

सुंधाय मड़रकेँ सभ सुंघहाधान कहै छै। सुंघहाधान छुबिते हाथमे गड़ि जाए छै। टोकैते देरी सुंघाय मड़रकेँ बकटेटी शुरू।

फेर कियो सुंघहाघान बाजि नै सकैत अछि। देखि लियौ लाठीक हुड़ाठ। मुँह भाँगि देबै, कियो बजत तँ। मुँहकेँ चुप्प राख।

तेरहे बरखक उचितवक्ता छै तइसँ की। ओकरासँ गपमे के जीतत। उचित बात फट्ट दऽ बजल-

“गोहारि, गोसांय सभ बन्न। सुंघाय बाबा कहि देलक। कियो मुँहसँ बाजि नै सकैत छी। भगतो वाक केनाक देत। चलै चलू आब किछु नै हएत। के बतीसी लाठीसँ झड़ाएत।”

भगतकेँ नवसिखुआ चेला फनका रपटैत बजल-

“देहपर नै लत्ता-चौधरी बोलत्ता। ऐ गामक मालिक सुंघाय छियो की जे ओकर औडर चलतौ। अखने सुंघबाकेँ कंठ पकड़ि बाहर दिस ठोंठिया देबो। बुझि ले, तोरो कोनो बाप नै बचेतौ।”

उचितवक्ताकेँ कपारपर तामस नाचि उठल। सुंघाय मड़र पाछूसँ डाँड़मे लाठी लगौने ठाढ़ छै। बूढ़ देहक भार लाठीपर देने आँखि मूनि देवता-पित्तरकेँ सुमरि रहल अछि।

गहवरक सीमामे बकटेटी नै करबाक चाही। हम पपियाहा। हमरा छेमा कऽ दिअ।

“एहेन गप कहत।” उचितवक्ता फोंफिया कऽ उठल आ सुंघाय मड़रकेँ पाछूसँ लाठी खेंच लेलक। लाठी चमकाबैत फनकापर हुड़कल।

सुंघाय मड़र धाँय दऽ डाँड़ भरे खसल। कुहरैत बाजल-

“हौ बाप, मारि देलक। ऐ लुकड़बाकेँ जन्मे भेल छै मरचायसँ। तब ने एकर बात आ बानि मरचाय जकाँ लगै छै। एकर बाप सभ साल लंगी मरचायकेँ खेती करै छेलै। ओहीसँ जोड़ा बरद कीनलकै। ओइसँ की। दारू पी कऽ सिरजल चीज केहेन हेतै।”

उचितवक्ताकेँ हाथसँ लाठी छिना गेल छै। महुराइत बजल-

“अपना बेटा दिस नै तकै छहक। टूटलो डाँड़पर अनकर आड़ि कोदारिसँ नै छाँटबहक तँ जलखै नै भेटतह। केहेन कुकरमी छहक, खेलि देबै सभटा बात।”

“नै गौ बाबू, कल जोड़ै छियौ। हमरा उठा कऽ पहुँचा दे।”

“अच्छा चुप रहू। शान्त भऽ जाऊ। देखियो ओने गोहारि शुरू भऽ रहल छै।”

पहुलका डाली जागेसरक लगल छै। डाली दौड़ कऽ अपने आगू चलि गेलै। सभटा देवताक किरपा छै। देव किरपा बिनु डोले नै पात।

आपसी फुसुर-फुसुर भऽ रहल छै। ओकर पति जागेसर गहवर घर दिस टकटकी लगौने।

“एहेन जवानीसँ भरल देह आ तब बाल-बच्चा नै होइ छै।”

“जागेसरक बाछी एहेने बनल छै। ऐबेर गाभ टेकतै की नै?”

“खेलावन भगत ऐ काजमे माहिर छै। आब देखियो तँ...।”

स्त्रीगण दिससँ कनी मन्द स्वर निकलै छै।

“भैयाखौकीकेँ लाज-धाक होइ छै की नै। अपने दहकेँ अपने जे करै छै। छिनरिया...।”

“अइठाम अबिते सभ देवी-देवा चढ़ि जाइ छै। आ नैहरा जाइते सभटा छूटि जाइ छै।”

“सुनै छिऐ जे नैहरासँ एकटा छौड़ा आठे दिनपर भेँट करए अबै छै। पछोड़ धेने रहै छै।”

“ई सभ तँ होइते रहै छै। तोरो मन होइ छौ की।”

एक दोसरकेँ मुक्का मारैत औरतिया सभ एकसंग हँसैत अछि।

“चुप। सभ मुँह बन्न कऽ ले। भगतकेँ भाव आबि गेलै।”

“कारणीकेँ एमहर लाबह।”

भगतियाक भगैत जोर-शोरसँ शुरू भऽ गेल छै।

“जय हौ देव। कनी नीकसँ देखियो। माथ आ पेट दुनूमे दरद छै।”

खेलावन भगत देह-हाथकेँ ऐँचैत धर्मडीहीवालीक आगूमे बैसैत अछि।

मंतर पढ़ि माथ हाथ दऽ रहल छै। माथपर सँ हाथ ओकरा छातीपर गिरबैत अछि। फेर पेटकेँ हँसोति दइ छै। पेटपर सँ हाथ ससरि पुन: माथपर। धर्मडीहीवाली चौंक उठै छै। ओकर देह सिहरि उठै छै। भगत फेर माथपर हाथ रखैत काजकेँ दोहरौलक।

“चटाक।” धर्मडीहीवालीक चमेटा भगतकेँ मुँहपर लगल। संगहि कंठ पकड़ि धकेलि देलक।

आशा नै छेलै से भेल। भगत ओंधरा गेल। तामसे थर-थर काँपैत। लोकमे हड़कम्प भऽ गेल। किछु ठाढ़ आ किछु बैसल अछि। स्त्रीगणक आँखि आश्चर्यमे डुमल।

“गे माइ गे माइ। आब की हेतै।”

“आगि बरिस जेतै। ठनका गिरतै।”

उचितवक्ताकँ नै रहल गेल तँ बजल-

“भगतकँ असल भूतसँ पाला पड़ि गेल छै। सभ गुण-मंतर अखनि भीतर भऽ गेल छै। टाँग केना असमान दिस ठाढ़ केने छै। लगै छै जेना टिटही होइ।”

फड़फड़ा कऽ उठैत अछि- भगत। बेंत लऽ कऽ धर्मडीीवालीकँ पीठपर तड़-तड़ा दैत अछि।

“आइ हमसभ भूतकँ भगा देबै।”

धर्मडीहीवाली भागैत अछि।

“रे खुनियाँ सभ। रे कोढ़ी फूटतौ रे बेईमनमा। गे माइ गेऽऽऽ।”

जगेसरा आगूसँ घेर लैत अछि। एक्के धक्कामे जगेसराकँ गिरबैत धर्मडीहीवाली पड़ाइत अछि। भगत देहसँ गरदा झाड़ि रहल अछि। जगेसरा हाथ जोड़ि थर-थर काँपि रहल छै।

“आब की हेतै यौ भगतजी। कोनो उपए लगाऊ। जे कही अहाँ।”

“हेतैक सभ उपए लगतैक। भगतसँ भूत नै जीत सकै छै। कोखिया गोहारि हेतै। तूँ परसू आबि कऽ भेँट कर। हमरे नाओं छिऐ रामखेलावन भगत।

पछुआरक अन्हारमे किछु करूण क्रदन सन भेल। भगत छड़पि कऽ गहवरमे ढुकि गेल। हवाक झोंक आएल। किछु दीप मुझा गेल।

लोक सभ पीठपर डरकँ लादने एका-एकी ससरि रहल अछि।

❍❍❍

४

ढेरूबा नै नाचै छै असलमे जागेसरक मन नाचै छै। सुतरी कटा रहल छै- केतौ मोट केतौ पातर। मन थिर रहै तब ने। मनकेँ थिर रखब बड्ड कठिन। ई तँ कियो साधक कऽ सकैत छै। सभ जँ साधक भऽ जेतै तँ देश दुनियाँकेँ कोन गति हेतइ। तँए पहिने मन उड़ै छै तब तन।

जागेसरक मन धारक थौकड़ा जकाँ उपला रहल अछि।

आइ तँ भुटाइओ वैध जवाब दऽ देलकै-

“धर्मडीहीवालीकेँ सन्तान नै हेतौ। विधाता कलम मारि देने छौ। एकर कोखि ऐ जनममे नै भरतौ।”

हौ बा आब कोन उपए हेतै हो। पहिने तँ लोक खोंखीबाला कहै छेलै। आब मुँह दाबि कऽ कहै छै-

“निरवंशा।”

दुआरिपर जगेसरा ढेरूआकेँ गिनगिना रहल अछि। सँगे ओकर माथा घूमि रहल अछि आ माथामे घूमि रहल अछि- धर्मडीहीवाली। किन्तु पछिला फूइसक घर थिर अछि।

ठीके कहै छेलै- उचितवक्ता-

“हटा ऐ ठाँठ गाएकेँ। कर दोसर बिआह। ला टटका माल। नीक नसल देखि-सुनि कऽ। पुरहिया लऽ आन। चाइरे-पान सालमे छौड़ा-छौड़ीसँ खोभारी भरि जेतौ।”

नसल तँ एकरो खराब नहिये छै। नमगर-छरहर काजा, भरल-पूरल सीना। जखनी सिंगार कऽ कए निकलै छै तँ संगी-साथीकेँ कहए पड़ै छै-

“जगेसरा भागशाली अछि। अपना तँ कमजोर, करिआएल, बेमरियाह अछि। किन्तु ओकरा मौगीकेँ देखियौ। जँ आगूसँ निकलै छै तँ मन फुरफुरा उठै छै।”

भाग्यशाली केतए। भाग्य केतएसँ नीक हएत। सुन्दर तँ अछि मुदा बाँझ। जँ निपूतर रहब तँ पिण्डदान के करत? हमरा बाद सम्पतिकेँ के भोगत? बुढ़ारीमे सहारा के बनत?

ओह ऐ औरतियाकेँ भगबहि पड़त। ठीके कहै छेलै- उचितवक्ता। मुदा भगेबै केना? छै तँ ई बड़ जब्बर।

ओइदिन खेलावन भगतसँ झाड़फूँक करबैले गेलिऐ। एके झापटमे भगतकेँ दाँत चियाइर कऽ खसा देलकै। महतो बाबाकेँ थानसँ भभूत लाबि देलिऐ। छाउर बुझि कऽ मूतनारमे फेक देलकै। यएह भोंसड़ीकेँ बिसबासे नै छै किछोपर। फल केतएसँ भेटतै?

आब एकरा डेँगा-ठेठा कऽ भगबहि पड़तै। मुदा केना कऽ आँखि उनटा कऽ जँ हमरा दिस तकै छै तँ हमरा लघी लगि जाइत अछि। तैयो हम तँ मरद छी, देह तानहि पड़त।

हम जँ मौगा बनल रहबै तँ उ बेहया बनि जेतै। संभार तँ हमरहि करए पड़तै। केतेक दिनसँ एकर चालि-चलन देखि रहल छी। नकोरबा बनियाँसँ केतेक सटिया कऽ गप करैत रहै छै। छनमाकेँ अँगनामे ढुकै छै तँ निकलैक मने नै होइ छै जेना। हम भूखल रहि जाइयो कोनो बात नै मुदा ई भोरे निकलि जाएत- टोल चक्कर लगबैले। टोलक चक्कर थोड़बे लगबै छै ई तँ दोसरे चक्करमे लगल रहै छै। केतेक बेर भऽ गेलै। भूखसँ पेट दुखा रहल अछि। हमरा दिस धियान रहै तब ने। धियान तँ आरो केकरोपर रहै छै।

धर्मडीहीवाली अँगनासँ निकलि कऽ टोल दिस जा रहल अछि। जागेसराक ढेरूआ रूकि गेलै।

“ऐ- केतए जा रहल छी? छुच्छे कूद फान? ऐ अँगनासँ ओइ अँगना? जेना कोनो काजे नै छै। एके लाठीमे टाँग तोड़ि देबौ। अपने घरमे बैठल रहबैं।”

धर्मडीहीवालीकेँ टाँग रूकि गेलै। उनटि कऽ बजल-

“देहमे तागद तँ छै नै आ टाँग तोड़ता? देखै नै छी केहेन बिमारी ढुकल छौ, तोरा देहमे। कोढ़ि फुट्टा कहीं कऽ।”

झगड़ा बढ़तै। जागेसरकेँ बढ़िया चांस भेँट गेल छै। उ झगड़ाकेँ बढ़ाबए चाहैत अछि।

“मुँहसँ गारि निकलतौ तँ थुथुन तोड़ि देबौ।”

“गारि नै देबौ तँ असिरवाद देबौ?”

“यएह बड़का आएल अछि- असिरवाद देनिहारि। निपूतरी, बाँझिन। गे भौंसरी, एकटा मूसोकेँ जन्मा कऽ देखही। तोरी माइकेँ।”

“खबरदार, हमरा माइक नाओं नै ले। पुछलीही नै अपना माएसँ। केतए केतए मुँह मारलकौ तब ने तोरा सन बेटा पैदा केलकौ। बेमरियाहा...।”

जागेसर ढेरूआ फेकैत लग चलि गेल अछि। करोधसँ थरथरा रहल अछि।

“मुँह बन्न राखबें आकि देबौ चमेटा।”

धर्मडीहीवालीकेँ आँखि तामसे ललिया गेलै। उ आरो लग आबि गेलै। देह अड़ि कऽ बाजलि-

“ले मार। असल बापक बेटा छी तँ मारि कऽ देखही। बापसँ भेँट करबा देबो।”

चटाक, चटाक। मुँहपर थप्पर पड़ल।

“तु थप्पर मारलें-हमरा। आइ हम जे न से कऽ देबो। आरो बखतमे टिटही जकाँ पड़ल रहैत छै आ मारै कालमे केतएसँ गरमी चढ़ि जाइ छै।”

ओ जगेसरा दिस हुड़कैत अछि। ओ डाँड़क डोरा आ झाँपल अंगमे लटकए चहैत अछि। मुदा जगेसरा तँ लाठी लऽ कऽ तैयार भऽ गेल अछि।

“निकल हमरा घरसँ- छिनरिया। कोन-कोन कुकरम कऽ कँ तब हमरा घर अएलें। पता नै। भागबें अइठामसँ आकि चलेबौ डंटा?”

“ले मार। आरो मार हमरा। अहिना भागि जेबो तोरा सात पुरखाकेँ घिना देबो। पूरा समाजमे उकैट देबो-सबकुछो।”

उ कानि-कानि कऽ फोंफिया रहल अछि। हाथ चमकाबैत जगेसराक लग सटल जा रहल अछि।

“भगा देबही। छातीपर छिपाठी रोपि कऽ रहबो। बहुते बल भऽ गेलो, हाथेमे। थप्पर मारबें।” कहैत जागेसरकेँ धकेलि देलक। आसाकेँ विपरीत जागेसर धड़फड़ा कऽ गिर पड़ल। आगि नेस देलक- जगेसरकाकेँ। तामसे काँपैत ओ लाठी नेने उठल।

“तोरी माँ की...। आइ तोहर हड्डी तोड़ि देबो। परान लऽ लेबो।”

फटाक-फटाक।

धर्मडीहीवालीक पीठ आर जाँघपर लाठी बरिस रहल अछि।

“गे माइ गे माइ। मारि देलक रेऽऽऽ। दौड़ रेऽऽऽ। कोढ़िफुट्टा बेदरादा, रे लकवाबला। गे माइ, मरि गेलियौ गेऽऽऽ।”

दूरेसँ टोलक लोक चिचिया रहल छै।

“रे जगेसरा- रूकि जो। मरि जेतै बेचारी। गलत बात। गाए-भैंस जकाँ पीटै छी।”

“एना मारबें तँ कोनो दिन लंका कांड भऽ जेतौ।”

“आखिर कोन झगड़ाकेँ निपटारा नै होइ छै।”

“ई औरतीओ बड़ड झगड़ालू अछि। छुलही कहीं के, आबो अइठामसँ जेबें की अड़ल छँए।”

लोक सभ बीच-बचाव करऽ रहल अछि। धर्मडीहीवाली दस पन्द्रह डेगपर ठाढ़ भऽ गेल अछि। आ ओइठामनसँ गरिया रहल अछि।

“हम छुलही? झगड़ाउ? केकरा घरमे सतबरती बैसल छै? हम सभटा जानै छी। सबहक बात सुनै छी। ऐ खुनिया, बेदरदाक कारने। रे अनजनुआँ जनमल, देहमे कोढ़ि फुटतौ रेऽऽ। हाथमे घुन लगतौ।”

जागेसर गरजैत अछि-

“ऐ बीचमे नै आबै कोइ। ई औरतिया सनैक गेल छै। दुसमन सभ एकरा सिखा-पढ़ा कऽ तुल-तैयार कऽ देने छै।”

कातमे ठाढ़ भेल लोक सभकेँ बाजए पड़ैत अछि-

“हमरा बुझि पड़ैत अछि मरदे सभ सनकल अछि। दू-चारि दिनपर अहिना पिटाइ प्रोग्राम चलैत रहैत छै।”

“पिटाइ नै करब तँ पूजा करू। कपारपर चढ़ा कऽ राखू।”

“से कहाँ कहै छी हम। सभ किछुकेँ एगो रस्ता होइ छै ने। आकि किछु बुझे ने सुझे फरमा दिया फाँसी।”

“ठीके कहै छै। सबहक औरतिया कोनो बाँझिन छै आकि छुलाहीए छै, एँ?”

औरतीओ सभ चुप नै रहि सकैत अछि।

“हे यौ बउआ मरद भेल सोना। ओकर सभ गलती माफ। औरतीओ भेलै टलहा। ओकर की गिनती छै।”

“चुप रहु अहूँ तँ अपना पुतहुकेँ खोरनीसँ खोंचारैते रहै छिऐ। की बजब।”

“केकरापर करब सिंगार-पिया मोरा आन्हरे हे...।”

धिया-पुता कातमे डेराएल सन मुँह केने ठाढ़ अछि।

धर्मडीहीवाली चौबटियापर ठाढ़ भऽ कऽ सात पुरखाकेँ गरिया रहल अछि। जगेसारा लाठी लऽ कऽ रेबाड़ैत अछि।

“ठाढ़ रह भोंसरी। आइ चौबटियेपर बेदशा करबौ।”

चोटक मोन पड़िते धर्मडीहीवाली भागैत अछि। पाछुसँ बाघ जकाँ गरजैत जागेसर। लोक तमाशा देखि रहल अछि।

कनीके दूर दौगलापर जागेसर हकमए लगैत अछि।

“जो अपना बापक पास। एमहर जँ घूमि कऽ एबें तँ प्राण लऽ लेबौ।”

कानैत-खीजैत धर्मडीहीवाली जा रहल अछि- नैहर दिस। नुआ-बस्तरक कोनो ठेकान नै। जेना सुइध-बुइध हेरा गेल हो।

ओ कानैत अछि। किन्तु भीतरसँ बोल फूटि रहल अछि।

“हमरा तँ बापसँ मोलाकात करबा देलही रे निवंशा। तोरो छोड़बो नै। अठगामा मैनजन-पंच जमा कऽ देबौ- तोरा दुआरिपर। आठो गामक लोकसँ थू-थू करबा देबौ।”

जागेसर ओहीठाम बैसि कऽ खोंखिया रहल अछि।
“खों... खों... खों... आक थू...।”

पता नै ओ थूक केकरापर पड़ल। समाजपर, गामपर आकि ओइ स्थानपर, धर्मडीहीवालीपर, आकि अपनहि आपपर। पता नै...।

❍❍❍

पंचायत! हँ, हँ बुझलौं गामक पंचैती। जातिक सरदार, मैनजन-देमान। करत छान-बान्ह। मुँहपुरूष आ सरपंचक शान। पंच भगवान। धुर, भगवान नहि बेमान। मुँह देखल पंचैती। जेकर लाठी तेकर जोर। निरबलक आँखिमे भरल नोर। कमजोरे लेल सभटा कड़ी।

आब गामे-गाम बनि रहल छै-कचहरी। तैयो पंचैती होइते छै। हँ जातिक पंचैती। परजातिक पंचैती। जाति तँ जातिसँ साइंग होइ छै। दस लोकक निर्णए तँ मानहि पड़तै। नै तँ समाजक नँगटाहा सभ नाँगटे नाचत। समाज, कानून, बन्धन, डण्ड जरिमाना। इनसाफक उपए। सभकेँ निसाफ मिलबाक चाही। नै तँ कहियो गाड़ीपर नाह आ कहियो नाहपर गाड़ी। सएह यौ मड़र।

कालू मड़रक दुआरिपर पंचैती भऽ रहल छै। जातिक मैनजन। हँ हँ बिच्चेमे बैसल छै। आँखि केना नचै छै- मुँहदुसी जकाँ।

धरमडीहीओसँ पंच सभ आएल छै। की बुझाइत छै, जगेसराकेँ, छोड़ि देतै ओहिना। ओइ दिन मारैत-मारैत थकचुन्ना कऽ देने रहै, अपना घरवारीकेँ। घरसँ भगा देलकै। आ पाछूसँ समादो पठा देलकै।

जे तोहर बेटी बदचलन छौ। चोरनी छै। बाँझ छै। राखह अपना बेटीकेँ कपारपर।

आ रे तोरी कऽ, एहेन डकलीलामी।

धर्मडीहीवालीक बाप तीन-चारि महिना धरि टकटकी लगौने इन्तजार केलकै। कोनो कौओ-पंछी सुइध-बुइध लइले नै पहुँचलै। अंतमे ओकर बाप जातिक मैनजनकेँ खबैर देलकै।

पूरा टोलक लोक जमा भेल छै। धनुखधारी मड़र, उचितवक्ता, ढोढ़ाइ गुरुजी भुटाइ वैद, फतींगा, बिडिओ साहैब, चंतनजी जेकरा सभ चोतबा कहै छै। आर बहुत गोटे कनी पाछू दाबि कऽ बैसल छै। पाछूसँ बीख उगलि मुँह चोरा लेबामे असान होइ छै।

टाटक पाछाँ स्त्रीगण कान पाथने अछि। ओ सभ आँखि नचबैत फुसुर-फुसुर कऽ रहल अछि।

कालू मड़रक नजरि ओतऽ तक पहुँच गेल।

‘‘आब मौगी सभ पंचैती करत। एस.पी., डी.एस.पी. मंतरी-संतरी सभ बैनते छै। आब कोनो कम पावर छै, ओकरो पास।’’

दुनू हाथ जोड़ैत आगू बजल-

‘‘तब ने ओइ राति जोकरबा दुनू हाथ जोड़ि कऽ नाचमे कहैत रहै- तुम्ही हो माता, तुम्ही पिता हो।’’

छौड़ा सभ खिखिया कऽ हँसैत अछि।

‘‘बुढ़बा बहुत दिन धरि लात तरमे रखि राज केलहक आब सभटा पाछू दऽ कऽ बोकरेतह। धनुखधारी मड़र रपटैत अछि-

‘‘चुप, गामक इज्जत झाँपि कऽ रखबाक चाही। दोसरो गामसँ पंच सभ आएल छै। की कहतौ।’’

ई काल केतएसँ आबि गेलै। की हौ, कथीक धोलफच्चका भऽ रहल छै। हे रौ जा रहल छै तँ जाए दही दोसर जातिक मैनजन किएक रहतै।

हँ हँ, जाउ अहाँ। हमरा जातिक मामला छै। जय भगवान। ढोढ़ाइ गुरुजी घूस नेने छै।

हँ-हँ, जगेसरासँ पाँच बोरा भुस्सा। विल्कुल फ्री। केतेक दिन फोकटमे चाह पीतै आ खेतै, से तँ अलगे। बजतै नै तँ घूस केना पचतै।

ढोढ़ाय गुरुजी बीचमे जोरसँ गरजैत अछि-

‘‘जोरू-जमीन जोरकेँ, नै तँ किसी औरकेँ। अपना औरतियाकेँ पाँजमे रखैले जगेसरा चारि-पाँच लाठी खींचे देलकै तँ कोन जुलुम भऽ गेलै। के सभ ताजनकेँ अधिकारी होइ छै से तँ सभ जनिते छिऐ।’’

धरमडीहीसँ आएल कन्हैया मैनजनक कनहा आँखि जखनि चमकै छै तँ सबहक सिटी-पिटी गुम भऽ जाइ छै। ओ अपन छिड़िआएल मोंछकेँ सिटिया रहल अछि। ढोढ़ाय गुरुजीपर जखनि ओकर ललिआएल नजरि

पड़ैत छै तँ तत्काल गुरुजी चुप्पी साधि लैत अछि। पाँच बोरी भुस्सा हवामे उड़ि जाइत छै। आ पेटमे बसात औनाए लगैत छै।

उचितवक्तासँ नै रहल गेलै तँ टोन कसि देलकै। "धुर ई ढोढ़बा की बजत। एकरा बहुकेँ तँ दोसर जातिक धरमीलाल पंजाब लऽ कऽ भागि गेल आ अइठाम लबर-लबर करै छै।"

"ई उचितवक्ता फेर टें-टें करए लगल चुप रहबें की नै।"

"हे, आइ जे पंचैतीमे खचरपन्नी करबें तँ मुँह थकचुन्ना कऽ देबो।"

"रौ तोरी कऽ। हमर बाप कहने रहै जे पंचैतीमे उचित बात ढेकैर कऽ बजिहेँ। आ तूँ मुँह थकुच देबही तँ बजबै केना। ऐ सँ नीक। हम अइठामसँ चलि जाए।"

बेंगाय बाबा आइ गाँजा नै पीने छै। नै तँ लौडिसपीकर जकाँ बजितै। ऊ तँ धरमडीहीवालीकेँ तरफसँ छै। जागेसर दिससँ ढेकैरतै तब ने फ्रीमे गाँजा भेटतै।

धुर नै बुझबहक। ओकर नजरि गड़ल छै। जगेसराक डीहबला जमीनपर। सोचै छै कहुना झगड़ा बढ़तै तँ कम दरपर ई दाव सुतरि जाएत।

हँ आबि गेलौं खिस्सा कहैबला खिस्सकर। ई तँ खिस्सेपर पंचैती कऽ देतौ।

ऊ जमाना गेलै। आब तँ जेकरा पासमे साम-दाम भय-भेद छै आकरे बुत्ते पंचैती हेतै। पंचैती कारणे केते पंच बिलटि जाइत छै।

जे दसगोटेमे नै बजल अछि। ठाढ़ भऽ कऽ बजैत काल ओकरा थरथरी छुबि दैत छै।

"हँ तँ, आब घोंकले गपकेँ केतेक घोंकैत रही। सभ बात जानले अछि। करू तसफिया।"

सुनियौ झटकलाल मड़रकेँ गप। अपन बेटी केकरा संगे भागि गेलै। तकर पत्तो नै लगलै। अच्छा छोड़ू। गप सुनू।

"यादि अछि ने मड़र। पुबरिया टोलपर चुनचुन पहुलका स्त्री पहुँच गेलै- थाना। तुरत्तेमे पुलिस पहुँच गेलै- दरबज्जापर। वर आ वरक

बापकेँ तेतेक पीठपर डण्टा बरसौलकै जे छर-छर नुआ-बस्त्रे... की कहब आब तँ वैह पहिलुकी स्त्री महरानी बनि कऽ घरमे बैसल छै।''

आब तँ औरतकेँ जमाना आबि गेलै। तैयो आकरो किछु दाबि-चापि कऽ तँ राखहि पड़तै। नै तँ ऊ सनकि कऽ किछो बनि सकै छै।

एकर मतलब गाए-भैंस जकाँ ओकरा डेंगा देबै।

नै हिसाब-किताबसँ। साँपो मरि जाए आ लाठीओ नै टूटै।

अइठाम तँ मारैत-मारैत लाठी टूटि गेलै। अपना घरवालीकेँ नै राखै चाहै छै।

जागेसरसँ पुछल जाए। किछु विशेष गप छै। आखिर, किएक नै राखए चाहै छै, अपना स्त्रीकेँ। कारण तँ दरपन जकाँ साफे छै। चारि सालसँ बेसी भऽ गेलै आ एकोटा बच्चा नै जनमा सकलै। यएह गप छै ने हौ जागेसर?

हँ-हँ बात तँ यएह छै, असलमे। दोसर बिआह करैले पंचायतसँ औडर भेट जाए। दोसर अपाय तँ छै नै। आखिर खनदान आ सम्पतिक रखबार तँ चाही।

गुँर केतौ आ भूर केतौ। ऐ बातक कारणे झगड़ा होइ छेलै। आब बुझलौं तरका गप। ऐमे धर्मडीहीवालीक कोन कसूर?

सभ कसूर ओकरे। जखनि खेत खराब छै तँ...।

फेर चुप। एक आदमी तँ दस-दसटा बिआह करै छै। यएह, डाँरमे ने डोरा बहु करत जोड़ा।

सार सभकेँ खाइले तँ जुमै नै छै। आ राजा जकाँ हजार गो रानी रखत।

तूँ गारि देबही। मार सारकेँ।

हँ बाजि नै सकै छेँ। आन गामसँ आबि कऽ रंगदारी। पंच छी की डकैत। हड़कंप मचि गेलै। सभ गोटे उठि कऽ ठाढ़ भऽ गेलै। किछु लोक सभकेँ शान्त कऽ रहल अछि।

भाय एनामे काज नै चलतौ। पाँचटा पंच एकान्तमे विचार कर। ने तँ

महाभारत भऽ जेतौ।
देखियौ पंच भगवान, ऐ छौड़ाक किरदानी। सभटा हमर लताम तोड़ि लेलक।

लिअ पंचक बेटा चोर। आब करू फैसला।

अच्छा चुप रहू। एकर निर्णए दोसर दिन हएत।

यएह करै छै केना। जेना छोटका जातिक पंचैती भऽ रहल हुअए।
अइसँ नीक तँ ओकरे सभ।
इह, हमरा सभसँ बहुत नीचो जाति तँ अछि!

तइसँ की। आखिर छी तँ शूद्रे।

चुपू हमर छूबल सभ खाइत अछि।
हँ हँ छुच्छे ठेसी।
एकान्तमे विचारि कऽ पंच सभ आबि गेल। सुनल जाए। की कहै छै।

“सुनू, जागेसरसँ गलती भेलै। ओकरा औरतियाकेँ एतेक नै पिटबाक चाही। बाल-बच्चा नै होइ छै तँ ओझा-गुणीसँ देखाबौ। डागदर वैदसँ इलाज कराबौ। तैयो नै हेतैक तँ दोसर बिआह कऽ सकैत अछि। किंतु धरमडीहीवालीकेँ राखहि पड़तै। निर्णए सभकेँ मंजूर अछि?”

हँ-हँ, दसक निर्णए, भगवानक निर्णए। मंजूर अछि। सभ मानि लिऔ।

ढोढ़ाय गुरुजी सोचै छै भुस्सा मिलत की नै।
खेलावन भगत मोंछ पिजा रहल अछि। गाममे भगत तँ हमहींटा छी।
धर्मडीहीवालीक बाप कनहा मैनजनकेँ कहने छै। “जँ अहाँ ऐ सम्बन्धकेँ नै टूटए देबै तँ जोड़ा भरि धोती देब।”

ओकर बामा आँखि फड़कि रहल छै।

उचितवक्ता दौड़ल आएल आ बजल-

“हे यौ धर्मडीहकेँ कन्हैया मैनजन! अहाँकेँ चौबटियापर पुलिस खोजि रहल अछि। कोनो मोकदमामे नाओं अछि की?”

“आएँ।”

मैनजन धोती सम्हारैत पड़ेला। एकाएकी सभ उठऽ लगल। डरक पंजा जेना बढ़ऽ लगल। सबहक अन्तरक दोख जेना ठाढ़ भऽ गेल

हुअए। स्वर जेना हवामे अलोपित भऽ गेल हो किंतु पएरक गतिमे तीव्रता आबि गेल छेलै। धोनाह भऽ गेल असमान दिस तकबाक केकरा फुरसति छै।

❍❍❍

६

स्वार्थक कारणे दुनू परानीमे झगड़ा भेनाय स्वभाविके अछि। झगड़ाक बाद देह आ मन अलग हेबे करतै। वएह सुआरथ फेर दुनूकेँ मिलन करबौतै। से बात साँचे किन्तु झूठे। जे हुए किन्तु झगड़ाक बाद मिलन एक तरहक नव संचार करैत छै, मोनमे। जेना लगैत रहै छै जे सभ किछो अभिनव भऽ गेल हुअए। दमित लीलसा सभ फन-फनाक ठाढ़ भऽ गेल हो। मनक फुलवाड़ीमे नव नव फूलक आगमन। भनभनाइत भ्रमर। आबि जाइ छै- अभिनव प्रीत!

धर्मडीहीवाली आपस आबि गेल छै। जागेसर आब डरे किछो नै बजै छै। एक सए झंझटिसँ एकेटा झंझटि ठीक। ठीके कहै छेलै उचितवक्ता- 'मौगीसँ जे अराड़ि करबें तँ सभ नेबाबी भीतरी घोंसारि देतौ आ बोलती बन्न भऽ जेतौ।

धर्मडीहीवालीपर भनभनियाँ भूत सवार भऽ गेल छै। जखनि-तखनि भनभनाइते रहै छै। कोन ठेकान छै। लोक कनी हटिए कऽ ओकरासँ गप करैत अछि।

धर्मडीहीवालीक मोनक बात के बूझत। जखनि ओ असगर होइत अछि तखैने ओकरा अगल-बगलमे सखी, सेहेली, भर-भौजाइ, अड़ोसी-पड़ोसी सभ ठाढ़ भऽ जाइत अछि। जहिना नैहरामे ठाढ़ होइ छेलै, तहिना। ओकरा सभकेँ कियो नै देखै छेलै। देखतै किए। मोनक आँखिसँ देखै छेलै मात्र धर्मडीहीवाली, आ गप्पो करै छेलै।

"गे निरमला, सन्तान कोन भारी चीज छै। चाहनेसँ कोन चीज नै होइ छै। कनी दिमाग लड़ा सभ कुछो ठीक भऽ जेतौ। देखै छी दिदियाकेँ। ओकरो सासुरमे अहिना झगड़ा होइ छेलै। बेटा जनमैते रानी बनि गेलै।"

"है शुरूमे तँ बहुतो हल्ला-फसाद भेलै। बदचलन छै। बेहया छै। किन्तु सभ किछो रसे-रसे दबि गेलै। के केकरा याइद रखै छै, कथी।

फुरसैतमे दोसरोक गप मोन पड़ैत छै आ काजक बोझ जँ माथपर रहै तँ अपनो विषयमे बिसरि जाइत अछि।''

''ई तँ एहेन दुनियाँ अछि। जे जखनि ढोल पिटैक हएत तखनि केकरो सुगबुगाइतो नै देखबै। आ जँ चुप्पी साधि लेबाक बखत हएत तँ बाघ जकाँ गर्जन करए लगत।''

''के कथी बजै छै से बात छोड़ू। अपना विषयमे सोचू। अहाँकेँ बच्चा चाही। ओकरा जन्म दिअ पड़त। डागदर-वैद्य गहवर-भगत चाहे जतएसँ हुअए।''

धर्मडीहीवाली हँसैत अछि भनभनाइत...। फेर तमसा जाइत अछि। डरे खोलि कऽ नै बजैत अछि किन्तु पतिकेँ देखिते ओर मान घिरनासँ दुबकि जाइत अछि। कोनो काज मोन लगा कऽ नै करैत अछि। जेना उड़ी-बिड़ी लगले रहैत अछि।

आब जागेसरो मनकेँ मारने रहैत अछि- डरे...। फेर ने पर-पंचैती बैसि जाए। आ समाज थू-थू करए लगे।

समए पाबि मुँह दाबि कऽ कखनो काल कहि दैत अछि।

''ओइ दिन खेलावन भगतसँ झगड़ि गेलिऐ। कहू तँ ओकरासँ फेर देखा दी। नै तँ महतो बाबा लग डाली लगबा दी। विसवास नै होइत अछि तँ डागदर-वैध जैठाम चलब ततहि चलू।''

किन्तु धर्मडीहीवालीकेँ दिल-मोन तँ भरबे नै करै छै, ऐ गपसँ जेना। हरदम देहमे आगि लगले रहै छै। सुतैत-बैसैत बेचैन। सोचैत छै- जँ पति चाहैत अछि तँ आइ भगतसँ भेँट करबै।

कौआ, मैना, बगरा सभ एकेठाम खेलाइ छेलै। चिल्हौड़क छाँह देखिते सभटा एकेबेर फड़फड़ा कऽ उड़ि गेलै, आसमान दिस...।

खुला अकासमे उड़ैत एक खुंडी मेघ। धर्मडीहीवालीक छाती धुकधुका उठल। नै जानि किएक...।

❍❍❍

७

सुनमसान बाधमे असगरे पीपरक गाछ। कोनो बटोहीकेँ छाँह दइले ठाढ़ छै। केतेको दिनसँ छै। किन्तु आइ उ गाछ नै छै जे पहिने रहए। ओइसँ की? गामक सीमानक निर्णए तँ गाछे करतै। एकरे धोधहैरमे बैसि कऽ प्रेत बोमियेतै आ डेरबुक लोक एक कोला हटि कऽ चकोना हएत पड़ैतै। बुधियार लोक सात बेर गोर लगि छाँहमे जिरेतै। कौआ जँ छेर दइ तँ तुरत्ते उठि कऽ चलि देतै। असगुन भेलौ भाग...। असगरमे फुनगी दिस तकबाक साहस केनाइ बुड़बक सबहक काज छिऐ।

दूबज्जी गाड़ीक सीटी ऐ गाछ लग ठोकले चलि अबै छै। अजय गाछक छाँहमे ठाढ़ भेल। तीन बरिसक बाद गाछकेँ देखि रहल छै। ऐ बीचमे कहुना कौलेजक पढ़ाइ पूरा केलक। बी.ए. पास केनाइ कोनो मामूली गप छिऐ! छाँहक बात मानि ओ रूखगर जगहपर भिनभिनाइत बैसि गेल।

सबचीज ओहिना छै। तैयो बदलि गेलै। बहुत दिन बितला बाद देखलहो चीज अनचिन्हार बुझाइ छै।

झटकलाल मड़रकेँ लोक सभ झटकू मड़र कहै छै। कारण-कहैमे सुविधा आ झटकू मड़र कोनो तमसाह बेकतीओ नै छै, जे कोनो डर हेतै।

झटकलाल मड़र मनमे बड़का-बड़का लीलसा पोसने छल। चाहे जे करए पड़ए। बेटाकेँ पढ़ेबै। अजय बेसी पढ़त तँ बड़का हाकिम बनत। बापोकेँ नाओं जाति-जवारमे चमकैत रहत।

खरचा तँ दिऐ पड़तै। आखिर बड़का हाकिम। जेते तेल देबै ततबे ने गाड़ी दौड़तै। नै छै रूपैआ। की तकै छी? शीशोक गाछ बेच। नै भेलौ तँ बाँस बेच। बेसी पैसा लगतै। कोनो मूतनार-हगनार खेत बेच ले। की यौ मालिक?

मालिक खेतक जड़सीमनबला रूपैआ दैत टिटकारी मारने रहए-

‘‘बाप बनौरा पुत्त चौतार, तेकर बेटा नेड़हा फौदार। देखिहेँ बादमे बापकेँ सरवेन्ट ने कहौ।’’

‘‘किछो करतह किन्तु पढ़ावह। पढ़लासँ बुइधगर मनुक्ख तँ बनबे करतह।’’

अजय सुनैत छल- कात-करोटसँ। किछ गप संगी साथीओसँ बुझि लैत छल। बीख-अमरीत पिबैत चलैत जिनगी!

सभ आस तँ पूरे नै होइ छै। किछ बँचलो रहै छै तँए ने जिनगीक दौड़ा-दौड़ी होइत रहै छै एक दोसरकेँ पछोड़ धेने दौड़ैत रहै छै। फेर नवका आश ठाढ़ भऽ जाइ छै।

केते कुद-फान केलक-अजय। किन्तु मोन मोताबिक नौकरी नै भेट सकलै। ओने झटकलालक अभिलाषा!

सोचै छै अजय- बाबूजीकेँ केतएसँ पता चलतै जे अइठाम कोन-कोन खेल चलै छै। भ्रष्टाचार आ तिकड़म केहेन नाच नचै छै। केना उनटा छुरीसँ हलाल होइ छै- लोक। हमरा जातिमे तँ कोनो बड़का नेतो नै छै। एक आध जँ छै तँ ओहो झोरउगहा। फेर तरघुसका रूपैआ केतएसँ एतै? ने पैरबी आ ने पैसा तँ सड़कपर टहल लगाउ।

नौकरी-चाकरी नै भेल तँ पढ़लौं कथीले?

जेना पीपरक धोधरिमे सँ कोइ पुछलक-

‘‘केतए जाइ छहक- अजय? गाम? गाममे के पुछतह तोरा? कोन काज करबहक तूँ? गमैया कोन काज हेतह तोरा बुत्ते? हर-कोदारि चला सकै छहक तूँ? रौद-बसातमे रोपनी-कटनी कऽ सकै छहक? गामक विद्वानक बीच रहि सकबहक? ऐठाम केकरोसँ कोइ कम नै बुझै छै। लिखनाइ-पढ़नाइ भले नै जनैत छै किन्तु सभ छै- ज्ञानवान विद्वान। सबहक अपन-अपन विचार आ थ्योरी छै। लाठीक सहारासँ चलैबला साँढ़ जकाँ ढेकरैत अछि। जेकरा घरमे एक साँझक खरचा नै छै ओकरो गप करोड़पति जकाँ चलै छै।’’

अट्टहासक स्वर-

"हा-हा-हा-हा, गाममे तूँ नै रहि सकबहक। मिस्टर अजय कुमार, तोरा सभ अजैया कहतह। बी.ए.क डिगरी हवामे उड़ि जेतह-फर-फर। ऐठाम शहरी ज्ञान तँ दूरक गप छै, तोहर कोनो बात कोइ नै सुनतह। ही-ही-ही।"

अजय गरजैत बजल-

"जरूर सुनतै। तूँ चुप रह। हम समाजमे पसरल कुरीतकेँ हटेबाक कोशिश करबै। ऐठामक जड़ता आ जिदकेँ तोड़ए पड़तै। देशक अंग-अंगकेँ साफ आ स्वस्थ्य करए पड़तै। गाम-गाममे सुधार भेलासँ देशक सुधार हेतै। समाज बदलतै। नव समाज बनबए पड़तै। किछ लोककेँ बीड़ा-पान उठबए पड़तै।"

अजय हाथ चमकबैत जोर-जोरसँ बाजए लगल।

शीला बड़ीकाल पहिनेसँ ओइठाम एकटा झोंझमे नुकाएल अछि। ओ अजयकेँ हाथ-देह फड़कौने आ चिचिया कऽ असगरेमे बजनाइ देखि रहल अछि। उ डेराएल सन सुरमे अजयकेँ टोकबाक प्रयास केलक। किन्तु अजय नै सुनलकै। ओकरा पक्का विश्वास भऽ गेलै जे गाछ परक प्रेत अजयकेँ गरसि लेलकै। वएह एकरा देहपर चढ़ि कऽ बजि रहल छै। ऐठाम तँ कोइ छेबो नै करए। केकरा कहतै। किछो जल्दी करए पड़तै। आगि-पानिसँ तँ भूतो-प्रेतो डेरा जाइ छै।

मनमे विचार करैत अगल-बगल देखलक। लगीचेमे एकटा खत्ता छेलै। खत्ताक कोरपर एकटा फूटल बालटी सेहो राखल छेलै। शीलाकेँ तुरन्त फुरेलै।

ओ बालटीमे पानि भरलक आ अजयकेँ माथापर उझैल देलकै। अजय चकोना हएत शीला दिस दौड़ल।

"के छी? एना किएक केलौं। ठाढ़ रहूँ।"

शीला उनटि कऽ भागलि। जेकरा देहपर भूत चढ़ल छै। से की करत, कोन ठेकान।

अजय झपैट कऽ पाछूसँ शीलाकेँ पकड़लक। तैयो शीला छुटबाक प्रयास कऽ रहल छै। जमीन भीजल छेलै पकड़-धकड़मे दुनू खसल। तरमे शीला ऊपरसँ अजय चढ़ल।

मुँह देखिते अजय चौंकैत बजल-

"शीला, अहाँ छी। एना किएक केलौं।"

"अहाँ असगरेमे अड़-बड़ बजै छेलौं। हमरा तँ बुझाएल जे अहाँपर प्रेत चढ़ि गेल अछि। आब बुझाइत अछि अहाँपर सँ उतरि कऽ हमरापर चढ़ि गेल अछि।"

"तेकर मतलब हम प्रेत छी?"

"अहाँ भूत-प्रेत नै चोर छी। तब ने हमरा मनक चोरि केलौं आ निपत्ता भऽ गेल छेलौं। आबो देहपर सँ हटू ने।"

"नै हटब।"

"जल्दी हटू। नै तँ धकेलि देब। देखै छिऐ कोइ आबि रहल छै।"

दुनूक मन केतेक बरिस पाछू चलि गेल छेलै से पता नै। जेना पछिला स्वर्गक सरोवर सोझहा आबि गेल छेलै। आ ओइमे दुनू संगे-संग जल-खेल करए लगल छेलै। गाछ परक चिड़ै-चुनमुनी ओइ खेलकेँ देखैत चुन-चुन करैत ओकरा सभक आनन्दमे अपन उपस्थिति दरज कऽ रहल छेलै।

विरह आ प्रतीक्षाक कथा चलैत रहल। केतेक देरसँ पता नै। वर्तमान उपस्थिति भेल तँ अजय पुछलक-

"अहाँ एमहर केतए आएल छेलौं?"

शीलाकेँ हँसी लगि गेल किन्तु ओकरा आँखिमे नोर भरल छेलै।

"हमर काका-काकी जहिया झगड़ा करै छेलै तहिया-तहिया अइठाम सुनहटमे आबि जाइ छेलौं आ अहाँक बाट जोहैत रहै छेलौं। केतेक माससँ अहाँक इन्तजारी करैत समए काटै छेलौं। जखनि कोनो चिड़ैओ

टा समाद नै दइ छेलै तँ कानैत-कानैत आपस घर घूमि जाइ छेलौं। आइ सगुनियाँ चिड़ैकेँ दरशन भोरे भेल छेलै। भेँट भऽ गेल।''

''हम तँ सोचने रही जे अहाँक बियाहो भऽ गेल हेतै। कोरमे बच्चा खेलाइत हेतै। किन्तु आब बुझाइत अछि जे हमहूँ भाग्यशाली छी। शाइत दुनू गोटे एक दोसर लेल बनल छी।''

''धुर, बियाहक बात की करैत छी। हमर पितयौत बहिन लीलीयाक बियाह होइबला छै। की हेतै से नै जानि। जातिक सभटा लोक अरचन रोपै छै।''

''अरचन किएक? ऐठाम लोक तँ बियाहकेँ यज्ञ बुझै छै तँए एक-दोसरक सहयोग करै छै।''

''हँ से तँ ठीके। किन्तु हमर पलिवार तँ ढाठल छै। बागल छै। हमरा परिवारकेँ जातिसँ अलग कऽ देने छै।''

अजय चौंकैत पुछलक-

''जातिसँ अलग किएक कऽ देने छै?''

मुड़ी झुकौने शीला मन्द स्वरे बजली-

''बाबूजी केँ मरलापर काका सराध-गैतक भोज नै केलकै। केतएसँ टका लाबितै। ओइ साल फसिल नीक नै उपजल छेलै। सभ मुँहपुरूषकेँ कहलकै- जे हमरा घरमे कोनो उपए नै छै। रोटीओ नै जुमै छै तँ भोज केतएसँ करब। किन्तु भोजक नाओंपर सभ जाति एक भऽ गेलै। ओ सभ कहलकै-

''अकलू मड़र दोसराक भोजमे बड़ फानै छेलै। जे भोज नै करए से दालि बड़ सुरकाए। ओकरा सराधक भोज लगबे करतै। जँ पूरा जातिकेँ भोज नै देतै तँ जातिसँ अलग। आगि-पानि सभ बन्न।''

''भोजक एतेक महत्व छै अपना समाजमे।''

''की कहब घरमाबाबूपर घर ढुक्का पंचैती हएत रहए। चट दऽ धरमाबाबू भोज गछि लेलकै आ कहलकै-

''उ तँ झूठ-मूठ हमरापर आरोप लगबै छै।''

भोजक नाओंपर सभ कुकरम माफ भऽ गेलै। अजय अवाक्! शीलाक मुँह दिस ताकि रहल अछि। मोनमे बिहाड़ि सन उठल छै। जेना ओकरा सौंसे देहमे जातिक जाल लटपटा रहल छै।

''कोइ आबि रहल छै। अहाँ संगे देखि लेत तँ की हेतै पता नै।'' कहैत शीला धड़फड़ा कऽ उठल आ टोल दिस चलि देलक।

वएह बाट छिऐ किन्तु लगै छै ऊ नै छिऐ। अजय अपना घर दिस बढ़ि रहल अछि। ओ सपनामे छै आकि यर्थाथमे पता नै। किन्तु गाम दोसर रंगक लगै छै। ओ लवका रंग ओकरा आँखिमे छै आकि...।

❍❍❍

८

'ठक-ठक-ठक'

गाछ कटि रहल छै। झमटगर आमक गाछ। कटबा रहल छै- झटकलाल मड़र। कुरहैड़क चोटसँ डारि-पात थर-थर काँपि रहल अछि। चिड़ई-चुनमुनी फड़फड़ा कऽ उड़ि रहल छै। जार-जार कानैत जेना कहि रहल छै-गाछ।

''हौ, हमरा नै काटह। हमर कोनो दोख नै। हम तँ तोहर सहायक छीयह। मीठ-मीठ फल, पवित्तर हवा, शीतल छाँह दैतै रहए छी। बरखा बूनीमे हमर सहयोग देखिते छी। तैयो हमर जान लऽ रहल छी। आह... हमरा बहैत खूनकँ कियो नै देखि रहल अछि- हौ...।''

जल्लाद जकाँ दू गोटे चला रहल अछि-कुरहैड़। गाँजाक निसाँसँ दुनू आँखि लाल। घामसँ नहाएल। चाहै छै- जलदीसँ जल्दी गाछकँ गिरा दी। मौतक निन्न सुता दी।

किछु दूर हटि कऽ झटकलाल मड़र ठाढ़ अछि। जल्दी गाछ कटबाक आग्रह कऽ रहल छै। जेना गाछ नै कोनो भरिगर बोझ ओकरे कपारपर लाधल छै।

झटकलाल मड़रक छोटका बेटा अजय जेना गाछक करूण क्रन्दन सुनि लेलक। ओकरा पाएरमे तेजी आबि गेलै।

''बाबूजी! आमक गाछ किएक कटबा रहल छिऐ?''

झटकलाल मड़र घूमि कऽ देखलक आ कनी गम्भीर होइत बजल-

''ई अपन गाछ नै छी अजय। ऐपर जीबू बाबूक अधिकार छन्हि।''

''जीबू बाबूकेँ?''

''हँ, हुनके दक्षिणामे देल गेल छै। बरिसोपूर्व तोहर दादाजी केँ श्राद्ध-कर्ममे आत्माक शांति आ मुक्ति लेल। दान-दक्षिणामे देलाक बादसँ हम सिरिफ रखबारि करै छिऐ।''

अजयक व्यंग्यसँ भरल स्वर निकललै-

“आ आम पकलापर अहाँ घर पहुँचा दैत छिऐ- वाह..।”

“हँ हौ। ब्राह्मण देवता छथि। हमरा ईमानदारीपर गाछ छोड़ने अछि। हुनके सबहक हाथमे तँ मुक्ति छै। ओ जँ हमरापर विश्वास करै छथि तँ हमरो कर्तव्य निमाहए पड़तै किने...।”

“अहाँ बताह भऽ गेल छी बाबूजी। हम गाछ नै काटय देब।”

“फेर, अहाँ पढ़ि-लिख कऽ की बजै छी। आगिसँ खेल करए चाहै छी। सराप दऽ देत तँ अगिला जनम तक पड़ि जाएत। जिनगीकेँ सफल करैले बहुत बात सहए पड़ै छै।”

“गाछ केकरो। रखबारि कोइ आर करए। डरे फल दोसरठाम पहुँच जाए। अहाँ डेराएल छी। आन्हर छी।”

झटकलाल मड़र तमसा गेल।

“दू अछर अँग्रेजी पढ़ि लेलहक तँ हमरा आन्हर बुझै छहक। पात्रकेँ देल दान छिऐ। तेकरा हम बैमानी कऽ ली। अधरमी कहीं कऽ।”

नै सुनने छहक- ‘जो जस करहि सो तस फल चाखा।’

“हँ, हँ बुझलौं। गाछक सेवा अहाँ करै छी। फलक रखबारि अहाँ करै छी। ओ फल खाइत अछि- जीबू झा। ई छिऐ कर्मक फल।”

“हमरा फलक चिन्ता नै अछि। असलमे गाछ हमर नै छी। हुनका लकड़ीक जरूरत छन्हि। अपन गाछ कटबा कऽ लऽ जा रहल छथि। दान-दक्षिणामे देल गेल छन्हि तेकरा हम केना रोकि देबनि। एहेन जुलुम हमरा बुत्ते नै हएत।”

“बाबूजी, जुलुम तँ अहाँसँ भऽ रहल अछि। जीअत गाछकेँ काटनाइ पाप करम छिऐ। अपराध छी। पर्यावरण दूषित भऽ रहल छै। गाछ-बिरिछक अभावसँ प्रदूषण फैल रहल छै। अहाँ गन्दगी फैलाबैमे मदति कऽ रहल छिऐ।”

“हम गन्दगी फैला रहल छिऐ की? अधरमी जकाँ बात तूँ करै छहक। पाप-पुण्यक गियान नै छह तोरा। तोरे सन लोकक संख्या जँ धरतीपर बढ़ि जेतै तँ ई धरती थरथर काँपए लगतै।”

अजय अपन केश नोचैत धुनधुना कऽ बजल-

“भैंसक आगाँ बीन बजेलासँ की फैदा। किन्तु गाछ तँ नै काटए देबनि।”

फानि कऽ आगू गेल आ लपकि कऽ कुरहैड़ पकड़ैत बजल-

“रूकि जा। गाछ नै काटि सकै छह।”

कनीए दूरपर धर्मानन्द बाबू आ ढोढ़ाइ गुरुजी दू गोटेसँ गप कऽ रहल अछि।

झटकलाल मड़र जोरसँ शोर पाड़ैत अछि-

“यौ धर्मानन्द बाबू सभ गोटे एम्हर आउ। देखियौ हमर बेटा पागल जकाँ करैए। गाछ नै काटए दइए। कहू जे जीबूबाबूकेँ की जवाब देबनि। कोनो तरहेँ एकरा ऐठामसँ हटाउ।”

धर्मानन्द लग आबैत बजल-

“जीबूबाबू तँ हमरे दुआरिपर छथि। हमरे टाएर गाड़ीसँ हुनकर लकड़ी जेतै। बहलमानक खोजमे आएल छेलौं। घोंचाय तँ गाड़ी चलबैमे माहिर छै। ओकरे ताकि रहल छी।”

फेर फुसफुसाइत स्वरमे आगू बजल-

“अहाँ तँ जानिते छिऐ मड़र। टाएरगाड़ी तँ घोंचायकेँ नाओंसँ उठल छेलै। ऑफिसमे ओकरे नाओं दरज छै। ओइ दिन- हम तँ चलाकीसँ आनि लेलौं। संदेह होइत अछि आब। कहीं बुझि जाएत तँ गाड़ी घेर लेत।”

झटकलाल मुड़ी झुलबैत कहलकै-

“धुर, ओकरा केना मालूम पड़तै। मुरूख-चपाट छै। एम्हर जीबूबाबू अपना सबहक संग छथि। किछो नै हेतै। मुदा पहिले हमरा ऐ झंझटिसँ निकालू। अजयकेँ ऐठामसँ ठेल-ठालि कऽ हटाउ।”

ढोंढ़ाय गुरुजीकेँ संगे आरो दू गोटे आबि गेल।

झटकलाल मड़रक इशारा पाबि सभ गोटे एक्केबेर अजयकेँ पकड़ि लेलक। घिंचैत-ठेलियबैत ओइठामसँ दूर लऽ जेबाक प्रयास करए लगल।

“अइठामसँ चलह। तूँ पढ़ूआ बाबू छहक। तोरा समाजक सभ गप नै बूझल छह। जीबूबाबू साधारण लोक नै छथि। पैघ पैरवीबला बेकती छथि। हमरा सभकेँ केतेक बेर नीक-अधलामे बचौने छथि।”

अजय ओइठामसँ घुस कऽ नै चाहैत छै। विरोध कऽ रहल छै। ओकरा सबहक बन्धनमे छटपटा रहल अछि। किन्तु बन्धन ढील पड़ै तब ने।

“कहै छी हम। हमरा छोड़ि दिअ। नै तँ बड़ड खराब बात भऽ जाएत। पाछू हमरा दोख नै देब।”

झटकलाल मड़र ठेलैत कहलक-

“चहल अजय चलह। काज नै रोकहक। सुनह- धरम करैत जँ हुए हानि, तैयो नै छोड़ी धरमक बानि।”

अजय जालमे फँसल चिड़ै जकाँ फरफरा रहल अछि। जाल तोड़बाक बारम्बार प्रयास कऽ रहल अछि। असोथकित भेलापर देह थिर भऽ गेल। मुदा बुइध तेजीसँ दौड़ए लगल। घर-दुआरि-गाम-शहर-राज्य-देश आरो आगू दिस...।

❍❍❍

९

धर्मडीहीवाली केतेक दिनसँ कोशिशमे लगल अछि किन्तु मौका हाथ नै लगै छै। ओकर विचार छै जे असगरमे सभटा बात खेलावन भगतकेँ साफ-साफ सुनाबी। परन्तु झार-फूँक करबैबलाकेँ कोनो अभाव छै। आ गप हाँकैबला तँ ओकरे लग बैसत। कखनो सुनहट नै। ऐसँ पहिने महतो बाबाक स्थानमे डाली लगौने रहए। घोड़ा साफ-साफ कहि देलकै-

"हम की करबौ। कोखि मारल छौ।" फेर दवाइ करबैक विचार भेल। नीक डाक्टर गाममे रहै नै छै। शहरक बड़का भारी डाक्टर लग जाएत तँ ओतेक रूपैआ केतएसँ लाबत? संगे के जाएत? रहत केतए अनभुआर जगहपर?

तैयो धर्मडीहीवाली निराश नै भेल छै। किछु दिनसँ खेलावन भगतपर ओकर विश्वास जेना बढ़ए लगलै। लचारीमे केतेक बेर विचारी करए पड़ै छै। हौ बाबू विश्वासे गुणे फल।

आखिर दस-दस कोसक लोक आबै छै। फलित नै होइ छै तँ ओहिना? मरल-सुखाएल कोखि हरियर भऽ जाइत छै। जश-अपजश विधि हाथ।

सोझेमे तँ छै-नररी बुढ़ियाक पुतोहू। ओझा-गुणी, डाक्टर-वैद्य, धाइम सभ नकारि देने रहए। खेलावन भगत दूटा सन्तान होइक वाक दऽ देलकै।

समूचा धनुकटोलीकेँ ठकमुड़ी लगि गेलै। जहिया वचन पूरा भेलै। कहए भगता आ पूराबए देवता।

ओना तँ ऐंठ खाइ छै आ झूठ बजै छै। सभ कुकरम देखिते छी। नचारकेँ विचार की। दस गोटेक बात तँ मानहि पड़ै छै। चलतीमे तँ माटिओ बिका जाइत छै।

धर्मडीहीवालीकेँ तँ सोचि-विचारि कऽ काज करए पड़तै। जागेसर तँ ओइ दिन कहि देलकै- पंच सभ साल भरिक समए देने अछि। अहाँक मन-जेकरासँ इलाज कराबी। ओझा-गुणी, डागडर-वैद्य। हमरा दिससँ

कोनो मनाही नै। सिरिफ टाका-पैसा पुरौनाइ हमर काज छी। पाछाँ हमर कोनो दोख नै।

खेलावन भगत बेंतमे तेल लगा कऽ सुररि रहल छै। भगतकेँ सभ किछु अलगे टाइपक। बेंत लगै छै- साँप सन। अन्हारमे देखि लेत तँ साँपे बुझेतै।

आइ धर्मडीहीवालीकेँ मौका भेटलै। सुनहटमे सभ गप फरिछा कऽ कहि रहल छै। किन्तु भगतक मन जेना केतौ आर टहल-बुलि रहल छै। देह केतौ आ मन केतौ। आँखि जेना निशाँमे डुमल छै।

धर्मडीहीवाली सोचैत अछि- एना किए केने अछि- भगतजी। कहीं ओइ दिनका गप मन तँ ने पड़ि गेलै। झाड़ैत काल चमेटा जे लगल रहए। कहीं हमरापर तमसाएल तँ ने अछि। आब जे होए। बखत पड़लासँ...।

धर्मडीहीवाली कनी सुरकेँ तेज केलक। अपना दिस धियान खिंचैले तँ उपए लगबए पड़तै।

“भगत जी, हमरो दुख हरण कऽ लिअ। आब तँ हम केतौ कऽ नै रहबै। जँ बाल-बच्चा नै हेतै तँ सोतिन तरमे बास करए पड़तै। अहाँ तँ बुझिते छी- नदी तरक चास-आ सौतिन तरक बास।”

“सौतिन ने कहै छै। बैरिन तरक बास।” टप्प दऽ बाजल भगत।

“हम तँ मूरूख छी भगतजी। अहाँ तँ भगवान छिऐ। परोपट्टामे अहाँक जय-जयकार भऽ रहल अछि। केतेकोकेँ दुख हरण कऽ लेलिऐ। हमरो दुखसँ उबारू। खाली आँचारकेँ भरि दिअ। जँ हमरा संतान नै हेतै तँ हम बेसहारा भऽ जाएब। पएर पकड़ै छी भगत जी। कोनो उपए करू।”

निसाँस खिंचैत भगत बजल-

“गुरु महराज कहने रहथिन- सुआरथ लगि करे सभ पीरीत।”

धर्मडीहीवालीकेँ आँखिसँ भरभरा कऽ नोर खसि पड़ल। भगत जीक दिल पिघलि गेलै। ओकरा हाथकेँ अपना पएरपर सँ हटबैत कहलक-

“घबरा नै। सभ कुछो हेतै। जे बाट देखाबै छियौ। ओइपर चलए पड़तौ।”

“बँचा लिअ भगतजी। जीअत तँ जीअत, मुइलोमे सौतिन नै बकसै छै। मुइलोपर बिसाइत छै।”

“तूँ तँ एक-तरफा सोचै छँ। पुरूषोकेँ दूटा स्त्री भेलासँ ओहिना कठ होइ छै। तरघुसका तकलीफ होइ छै। तोरा तँ मालूमो नै हेतौ घोंचाय मड़र भायक खिस्सा।”

“हमरा केतएसँ मालूम हेतै।”

“आब तँ बेचारा दुनियाँसँ चलि गेला। चारि-पाँच साल पहुलका गप छिऐ। सौतिनियाँ डाहक शिकार भऽ गेलै। दुनू स्त्री मिलि कऽ दशा बिगाड़ि देने रहए। देखैत छी आइओ दुनूटा साँढ़ जकाँ ढेकैर कऽ लड़ैत छै।”

“की भेल रहै भगतजी?”

धर्मडीहीवालीक आँखिमे उत्सुकता भरि गेल छै। खेलावन भगत पलथी मारि कऽ बैसि गेल। दहिना जाँघपर राखल बेंत थरथरा रहल छै। मुँहसँ खिस्साक बखान चलि रहल छै।

“घोंचाय मड़र भायक नाओं रहै- चिचाय। एकटा स्त्रीमे संतान नै भेलै। फेर दोसर केलक। ओहोमे संतान नै भेलै। दुनू औरतियामे राति-दिन हड़-हड़, खट-खट होइते रहए। चिचाय झगड़ा छोड़बैमे अपस्याँत। दुनू तरफसँ गाड़ि मारि सुनए पड़ैत। चिचाय लवकीकेँ बेसी मानैत। ओकरो संगे राति बिताबैत। पुरनकी कछ-मछ कऽ राति काटैत। सौतिनिया डाहसँ जरैत पुरनकी सोचलक।”

किछु काल रूकि भगत आगू बजय लगल-

“हँ, अमवस्याक राति रहए। खट-खट अन्हार। टिपिर-टिपिर बून चुबैत। हाथ-हाथ नै देखि पड़ैत। लबकी जइ घरमे सुतैत रहए ओइ ओसरपर चिचाय दहिना पएर रखलक आकि बामा पएर पुरनकी पकड़ि लेलक। अन्हारक कारने चिचाय देखि नै सकल। ओ डरे ‘आऊँ, आऊँ’ करए लगल। लबकी दौग कऽ निकलल आ दहिना पएर पकड़ि लेलक। दुनू अपना-अपना दिस खिंचए लगल। अपना-अपना घर दिस लऽ जेबाक

प्रयास। खैंच रहल छल। चिचायकँ बुझि पड़लै जे दू फाँकमे चीर कऽ बँटि लेत। ओ बाप-बाप करैत चिचिया उठल। अड़ोसिया-पड़ोसिया जमा भेल। तखनि ममिलाकँ शान्त केलक। दूटा स्त्री केलाक फल एहनो होइ छै।''

''भगतजी, तैयो मरदक जाति ऊपरे रहै छै। हमर नैया कोन विधि पार लगतै।''

''तूँ चिन्ता नै कर। आबए दही उ शुभ घड़ी। उ पवितर राति।''

खेलावन भगत बेंत उठा कऽ उपदेश दिअ लगल-

''सात दिन पहिलेसँ अरबा-अरवाइन भोजन। दुनू बखत स्नान। मन देह शुद्ध। चौबटियापर पूजा-चक्कर। बाहर बजे रातिमे एकान्त जगहपर आबए पड़तौ। राह-बाटमे कोनो टोका-चाली नै। कियो देखै नै। निशिभाग रातिमे चौबटियापर स्नान-पूजा कबुला सभ करए पड़तौ। समैपर सभटा बात बुझा देबौ। भेँट करैत रहिहेँ। शरणमे आबि गेल छेँ तँ कल्याण भऽ जेतौ।''

''धन्य हो भगतजी।''

धर्मडीहीवाली उठि कऽ आँगन दिस चलि देलक। ओकर पएर स्थिर नै भऽ रहल छै। जेना निशाँसँ मातल हो तहिना ओकरा मनमे बुझाय छै। पता नै ई निशाँ सफलताक छिऐ वा असफलताक।
ओकर पएरक गति तेज भऽ गेलै। तैयो गहबरक गन्ध ओकरा चारूभरसँ घेरने छै...।

❍❍❍

राति जमुन भारी सन लगै छै। खट-खट अन्हार छै।
एते लोक केतए जाइ छै हौ?

गोपी मड़रक दुआरिपर बहुते टोलबैया जमा छै। ठाढ़ भेलहा सभ गप-सप कऽ रहल छै आ बैसलाहा सभ फुसराहटि। लोकक बीचमे गोपी मड़रक जेठका बेटा मनमा बैसल छै। बैसल नै छै बल्की अदहा सूतल आ अदहा जगल छै। जेना निशाँमे मातल हुअए। औंघराए कऽ खसैले करैत छै किन्तु ओकर जुआन स्त्री पाछूसँ सम्हारने छै। ओकरा स्त्रीकेँ अपना देहक कोनो सोह-सुरता नै छै। फाटल वस्त्र रहलाक कारणे ओकर छाती कनीए उघाड़ छै। सबहक नजरि पहिने ओइ उघड़ल अंगसँ टकरा जाइ छै।

आगूमे दू-तीन हाथ जगह खाली छै। जैठाम जरैत लालटेनक इजोत आ कुदैत-फानैत कीड़ा-फतिंगा। नीमक छोट-छोट ठारि आ पात राखल छै। खेलावन भगत अपना चेला-चपाटीक संगे झाड़-फूकमे लागल अछि। गरजि कऽ मंत्र जाप करैत नीमक ठाढ़िसँ बीखकेँ झाड़ि रहल अछि।

“एगारह हाथ काय चल
बरहम दोहाय चल
सातो पुरा नाग चल
हरो-हरो बिसंभरो
दोहाय बिसहारा माताक छिअ।”

गोपी मड़र अखने भुटाय वैद्यकेँ सोर पाड़ए गेलै। ओकर छोटका बेटा घनमा नीमक ठाढ़ि-डारि आ लगपाँचेक माटि लाबैले गेल छै।

लोक आपसी फुसराहटि कऽ रहल अछि। पाछूसँ केकरो जोरगर स्वर आएल-

“की भेल छेलै हौ?”

“दुनू परानी सूतल छेलै। निन्न टूटलापर चिचिया कऽ कहलकै- हमरा किछु काटि लेलकौ। दौग कऽ आबैह जा।”

“हँ, सुनैत छिऐ जे परिवारमे कमाउ पूत वएह टा छै।”

“खेतपर सँ थाकल-ठेहिआएल। खेलाक बाद सुति रहलै। खाट, चौकी तँ घरमे नै छै। सिमसल जमीनपर सुतै छेलै। साँप काटि नेने हेतै।”

“हँ हौ, घरक दशा नै देखैत छहक। एक दिस कूड़ा-करकटक ढेरी तँ एकदिस जंगल-झाड़। केतौ साफ-सुथरा देखै छहक। एनामे मनुख रहतै।”

“भुटाय वैद्य की कहै छै हौ?”

“कहै छै- असगुन भऽ गेलौ। सुनै छी ने नढ़िया भूकि रहल छौ। जान लेबा बिमारी छौ एकरा।”

ई सुनि मनमाक स्त्री जोर-जोरसँ कानए लगली।

“फटृट चुप, कुलछनी। बाप-बाप चिचिया रहल छैँ। सतबरती रहितैँ तँ एना हेबे नै करितौ।”

गोपी मड़रकँ ठोर सुखि गेल छै। आँखिमे नोर नै छै तैयो गमछासँ पोछि रहल अछि। मनमाक स्त्री ठोह पाड़ि कऽ कानि रहल छै। गोपी मड़रक छोटका बेटा घनमाकेँ आब दुख बरदाइशसँ बाहर भऽ रहल छै। ओ चिचिया कऽ कहै छै-

“हौ भैयाकेँ कहुना बँचा दहक हौ सर-समाज।”

मनमाक हालति निरन्तर बेसी खराब भेल जा रहल छै। आब ऊ घररए लगलै।

“नै बँचतै शाइत आब।”

लोक लगही लाथे ससरि रहल अछि। निसाँस छोड़ैत बजै छै-

“लगै छै साँप नै कटलकै, काल डसि लेलकै।”

“आँखिओ नै तकै छै। साँस केना घुरघुराइ छै।”

“बेचारी, भरल जुआनीमे विधवा भऽ जेतै।”

“धुर, औरतियाकेँ कोन ठेकाना। तुरत्ते दोसर बियाह कऽ लेतै। बिपैत तँ गोपी मड़रकेँ पड़लै। बेचारेकेँ कमौआ पूत...।”

खेलाबन भगतकेँ आँखि लाल भऽ गेलै जोरसँ गरजि कऽ बजै छै-

“एहेन कठोर छइ जे सुनि नै रहल अछि। उत्तरसँ रस्ता खाली करै जा। महा डाकिनी मंत्र पढ़ए पड़तै।”

“हे, हौ, हटै जा उत्तर भरसँ। बाट खाली करै जा।”

लोकमे सुगबुगाहटि होइ छै। एने-ओने हटि जाइ छै।

“हे रौ, उत्तरसँ हटि जो। कोन ठेकान छै- देवी औतै की साँप।”

मुदा उत्तरसँ हड़बड़ाइत अजय अबैत छै। किछ काल तँ ओकरा जानकारी लेबामे लगि जाइ छै। धनमा कानि-कानि सभटा गप कहै छै। सुनिते ओ तमसा जाइ छै आ चिचिया कऽ कहैत अछि-

“किएक सभगोटे मिलि कऽ एकर जान लऽ रहल छहक। बहुत नाटक केलहक। बेचारा अन्तिम घड़ी गनि रहल छै। आबो मंतर-जापकेँ रोकह आ लऽ कऽ अस्पताल चलह।”

सभ ओकरे दिस तकए लगल। रामखेलावनक आँखि तामसे ललिया गेलै। ओ फुफकारैत बजल-

“आबि गेलौ बकटेट। हमरा डाकनि मंतरकेँ बिच्चेमे तोड़ि कऽ नाश कऽ देलकौ।”

अखनि अजय केकरो बात नै मानतै। जान जाइक सबाल छै।

“ऐ भगतजी, एकरा जानक गारन्टी लेबै अहाँ? जँ ई मरि जेतै तँ अहाँकेँ गोपी मडरक बेटा आपस करए पड़त। अहाँकेँ अपनापर बिसवास अछि। अहाँ बँचा लेबै।”

भीतरे-भीतर खेलाबन भगत डगमगा गेल। किछु तँ बाजए पड़तै।

“ऊपरबलाकेँ यएह इच्छा हेतै तँ के रोकि सकैत छै। देवीक कृपासँ केतेकोकेँ ठीक केलिऐ। एकरो ठीक करबै।”

“ई तँ मरल जा रहल छै आओर अहाँ कहिया देवीक कृपासँ ठीक करबै। आ हमर दाबा अछि- जँ ई जीअत अस्पताल पहुँच जाएत तँ ठीक भऽ जेतै। एहेन स्थितिमे कियो केकरो अस्पताल लऽ गेल हेबै तब ने बुझबै।”

नकोर बनियाँ बिच्चेमे टपकल-

“हँ भाय, जरटोलीमे हमरा बहनोइकेँ साँप कटने रहै। चिरा लगा कऽ ऊपर जौड़ीसँ बान्हि देलकै आ अस्पताल लऽ गेलै। दोसरे दिन

ठीक भऽ आपस एलै। अस्पतालक बड़का डागदर भगवानोसँ बढ़ि कऽ छै।''

अजय फटकारैत बजल-

''मुँह की ताकै छहक। एकरा उठाबह आ चलह अस्पताल। ओझा-गुणीक चक्करमे जान चलि जेतह।''

''लाबह खाट। टाँगि कऽ लऽ चलह। ने सड़क छै आ ने गाड़ी।''

गोपी पड़रक छोटका बेटा दौग कऽ खाट लऽ अनलक।

तामसे फोंफिया कऽ खेलावन भगत उठल आ झटकि कऽ चलल। औंठा धोतीमे लगलाक कारणे धड़फड़ा गेल।

बीचसँ स्वर आएल-

''यौ भगतजी, ढेका खूलि गेल। सम्हाररू जल्दी।''

खेलावन भगत तामसे थरथराइत बजल-

''नासे काल विनासे बुद्धि। देवी माइक कारजमे अड़चन। सभ नास भऽ जेतौ।'' ढेका पकड़ने फनकैत जा रहल अछि।

सनसनाइत अधरतियाक समए। गामक चारूभर थाल-कादो आ पानिसँ भरल। एकोटा सड़क नै। खटोला उठा कऽ चलब आड़िये-धुरे सम्भव छै। कात-करोटक कटहा झाड़ टाँगमे लगैत छै। एक मील एहने कठिन बाट छै। हिम्मत बान्हि चारि-पाँचटा युवक खाट उठौने जा रहल छै। गोपी मड़रक बेटा खाटपर पड़ल छटपटा रहल छै। समए जेतेक बितैत छै तेतेक रोगीक हालति खराब भेल जा रहल छै।

''हौ जल्दी चलह हौ।''

''एहेन खराब रस्ता ऊपरसँ कनहापर एतेक भार। केना दौगबै हौ।''

सड़कपर पहुँचबामे घंटा भरिक समए लगि जाइ छै। खाटकेँ एककातमे रखि सभ गोटे साँस खींचैत ठाढ़ भेल।

गोपी मड़र लग जा अपना बेटाकेँ मुँह उघारि देखैत अछि। आ चिचिया उठैत अछि-

“रौ बौआ, रौ मनमा उड़ि गेलौ रौ।”

सभ खटोलाक चारूभर घेरि नेने अछि। अजय छूबि कऽ देखैत अछि।

“वास्तवमे मरि गेल।”

सभ एक दोसराक मुँह ताकि रहल अछि।

“मरि गेलै आब की करबहक?”

“आपस लऽ चलह। कपारमे यएह छेलह।”

गोपी मड़रक छोटका बेटा बपहारि काटि रहल अछि। केतेक गोटे आँखिक नोर गमछासँ पोछि रहल अछि। कालू मड़र कहैत अछि-

“ठीके कहै छेलै खेलाबन भगत। घमण्ड देखे लहक। टूटि गेलह ने धमण्ड। सभटा खेला अजय लगेलकै। आब वएह जवाब दौ। गोपी मड़रक बेटा आपस कऽ दौ। बकटेटीक कारणे भगत कहि देलकै- नास भऽ जेतौ।”

“हमरा सभ केतए जेबै? की करबै? झाड़-फूकक सिबा रस्ता कोन?”

“अस्पताल निकटमे नै छै। सड़क एकोटा नै छै। गाड़ी-घोड़ा नै छै जे चढ़ि कऽ फर्रसँ उड़ि जो।”

“हम तँ कहै छेलौं जे रस्तेमे खतम भऽ जेतौ। मुदा हमर बात सुनए तब ने।”

अजयक बोल नै फुटि रहल छै। आखिर केकरा की जवाब देतै। अधिक लोक कालू मड़रक समर्थन दऽ रहल छै। ओ सोचि रहल अछि- गामसँ केना अंधविश्वास, जड़ता आ जीद्दकेँ हटाओल जाएत। ज्ञान-विज्ञान बढ़ि कऽ केते आगू चलि गेल। गाम केतेक पाछू अछि। झाड़-फूक करैत-करैत मरि जइतै तँ कोनो गप नै मुदा बँचबैक प्रयासमे मरि गेलै तँ आब देखि लियौ। दू घंटासँ झाड़-फूंक कऽ रहल छेलै। जँ दू घंटा पहिले अस्पताल लऽ गेल रहितै तँ एकर जान बँचि जाइतै।

आगू-आगू खटोला जा रहल अछि। आपस गाम दिस। पाछूमे अछि, गोपी

पड़र आ ओकर छोटका बेटा। कानैत, धड़फराइत बढ़ैत। करूण क्रन्दण बढले जा रहल अछि। ओही मध्यमे अजय जेना घेरा गेल अछि।

❍❍❍

“दौग कऽ अबै जा हौऽऽऽ। देखहक हौ लोक सभ। हमरा अँगनामे ढेपा बरिस रहल छै। पछुआर दिससँ केतेक ढेपा फेँक रहल छै। दौगै जा हो।”

“गे माइ गे माइ। कोन उपद्रव शुरू भऽ गेलै गे। कोन देवी-देवता खिसिया गेलै हो देव। हौ समाज बँचाबह हौ।”

हल्ला गुल्ला सुनि बहुते लोक दुआरिपर जमा भऽ गेल छै। देवीपुरवालीक मुँहपर डर नाचि रहल अछि।

“की भेल?”

-अड़ोसी-पड़ोसी पूछि रहल छै।

“जान बँचाबह हौ। पछुआर दिससँ ढेला बरिस रहल अछि, अँगनामे।”

“अन्हार रातिमे पछुआरमे केना कऽ देखबै?”

“फुलचनमा टॉर्चक इजोतसँ देखही तँ के छी सरबा।”

“हे, गारि नै देबाक चाही। किनसाइत देवी-देवताक ममिला हेतौ तँ धक्कापर चढ़ि जेबे। बुझि लही, एक्के बेरमे जय-सियाराम।”

हिम्मतगरहा तीन-चारिटा छौड़ा आगू बढ़ल। चारूभर टॉर्चक इजोत छिड़िया गेलै।

“कहाँ छै कोइ हौ। नुका तँ नै रहलै।”

“कोन ठेकान, कहीं भूत-प्रेरक ममिला ने होइ।”

“भऽ सकै छै। देवीपुरवाली कोनो कबुला-पाती केने होइ आ पूरा नै केलाक कारणे देवी प्रकोप मचबैत होइ।”

“देवीपुरवाली लालटेन नेस रहल छै। अँगनामे तँ ढेपाक ढेर लगल छै। एकर बेटे नै छै।”

“धुर, उ तँ चौकपर ताड़ी पीब कऽ मतंग हेतै।”

देवीपुरवालीक पुतोहु चमकी ओसारपर बैसल छै। बेचारी डरे थर-थर काँपि रहल छै।

देवीपुरवाली विधवा रहितो मरद जकाँ काज करैत छै। बेटाकेँ जन्मैते पति

सदाक लेल संग छोड़ि देलकै। ओइ बेटाक भरोसे पहाड़ सन जीनगी काटि लेलकै। ओकर बेटा 'नकचट्टा' आब जुआन भेलै। ओइक संगे आसा जगलै जे एकटा कमौआ पूत भेल आब। किन्तु ओहो पियक्कड़ भऽ गेलै। काम करत तँ करिते रहि जाएत। कहीं ताड़ी पीबैले गेल तँ कखनि आएत पता नै। सासु-पुतोहु मिलि कमा-खटा कऽ कहुना गुजर चला रहल अछि।

"कही एकर पुतोहु चमकी डाइन तँ नै छै हो?"

"नै-नै, ई बात झूठ छै। एतेक भोली-भाली औरत डाइन केना कऽ भऽ सकै छै।"

"हँ, हँ, भोला-भाला चेहरा भीतर दिल बेइमान।"

"हँ रौ भाय। तब ने जइ समैमे पहिलुक बेर आएल रहै। लबे-धबे रहै। टोलमे बड़का हो-हल्ला भेल रहै।"

"हे रौ, ऊ जइ घरमे ठाढ़ होइ ने ठीक ओकरा कपारक सामने घरक छप्परमे आगि लगि जाए छेलै। उतरबरिया घरमे जाय वएह बात। दक्षिणवरिया घरमे जाय फेर वएह बात। ई तँ चट दऽ लोक मुझा दइ छेलै नै तँ पूरा घर जरि कऽ सुड़डाह भऽ जएतै।"

"पसरतै केना कऽ। बान्हल आगि रहै ने। बुझिही, औरतियाकेँ देह नै रहै, आगिक भट्ठी रहै।"

"तब तँ नकचट्टाकेँ सलाइ कीनबाक कोनो जरूरते नै।"

सभ गोटे एक्केबेर खिसिया कऽ हँसए लगल। उन्मुक्त हास्य।

"अरे तोरी कऽ, ई तँ असल अगिनदाइ छियौ रौ।"

"फेर ई बिमारी ठीक केना भेलइ?"

"वएह खेलावन भगत केतेक दिन तक झाड़ फूंक केलकै। तब अगिनदाइक देहसँ आगि कम भेलै।"

"सुनने रही जे ओकरे लग गेलासँ ई खेला शुरू भेल रहै।"

"हँ मथदुखी झड़बैले खेलावन भगत लग लऽ कऽ गेल रहै। ओही दिनसँ ई अगिलगौना काण्ड हुअ लगलै।"

“तब तँ कुल करामात खेलावने भगतक रहै।”

पछुआर दिससँ अजय सोर पाड़लक-

“दौग कऽ एने अबै जो। भूत पकड़ा गेलौ।” सभ एक्केबेर दौगल। बैगन गाछक झोंझसँ अलटरबाकेँ निकालैत अजय कहलकै-

“एकरा पंचक पास लऽ चल।”

“हँ हँ ठीके बात। घोंचाय अपना बेटाकेँ किए नै सम्हारैत छै। राति-विराइत औनाइत रहै छै। रातिचर भूत जकाँ।”

“लोककेँ डेरानाइ कोनो नीक गप होइ छै। कहीं आँखिमे ढेपा लगि जाय तँ फूटि जेतै।”

“जन्मेले टासँ नै होइ छै, पतिपालो करए पड़ै छै। लऽ चल। पंचसभ निरलय करतै।”

डेढ़हथ्थी कान्हपर नेने घोंचाय गरजैत देवीपुरवालीक दुआरिपर पहुँचलै।

“हमरा बेटाकेँ पंचक पास लऽ जेनिहार के छी? ई छौड़ा अखने अँगनासँ खा-पी कऽ निकललै। मुतै लेल वाड़ीमे गेल छेलै। ई केना कऽ ढेपा फेकतै? छै कोइ गबाह? देखलकै ढेपा फेकैत? अजैया दू अक्षर शहरसँ पढ़ि कऽ की आएल जे सभ जगह अपने कबिलगीरी। ओकरा अँगनामे कोनो देवी ढेपा फेकै छै आ नाओं लगबै छै, हमरा बेटाकेँ।”

घोचायक स्त्री गारि पढ़ैत पाछूसँ अबै छै।

“के निपूतरा हमरा बेटाकेँ पकड़ने अछि। कोनो चोरी-डकैती केलकै की। कोइढ़फुट्टा, छोड़ हमरा बेटाकेँ। ने तँ जे ने से कऽ देबै।”

झमारि कऽ अपना बेटाकेँ छोड़ौलक। ओकर बाँहि पकड़ि घिचने घर दिस चलि पड़ैत अछि। पाछूसँ फनकैत घोंचाइ जा रहल अछि।

“अखनि तँ बेकारक झगड़ा ठाढ़ भऽ जइतै। अजयकेँ कोन दुसमनी छेलै, ओइ छौड़ाक संग।”

“दुसमनी ओकरासँ नै छै। असल दुसमनी घोंचायसँ देवीपुरवालीकेँ छै।”

उचितवक्ता बीचमे आबि कऽ बाजए लगल-

“बेटाक जन्म भेलापर अँगनासँ बहींगा फेकल जाइ छै। जे घरक ऊपरसँ दरबज्जापर गिरबाक चाही। फेर ओही बहींगामे बैरक झाड़ आ जूता लटका कऽ घरक आगू गाड़ल जाइ छै।”

“घोंचायक संग की भेल रहै?”

“घोंचायक बेटा भेल रहै ने तँ अँगनासँ बहींगा फेकने रहै। ओही समैमे देवीपुरवाली दुआरिपर ठाढ़ रहै। बहींगाक नोक ओकरा टांगमे गड़ि गेलै। पंचैती भेलै तँ घोंचायकँ डण्ड-जरिमाना लगलै। ओही दिनसँ दुसमनी चलि रहल छै।”

“कहीं ढेलफेक्का भूतकँ घोंचाय भेजैत हेतौ।”

“कुछो हौ। खेलाबन भगतकँ पूजाक खरचा भेट जेतै। तब देवीपुरवालीकँ कल्याण हेतै।”

देवीपुरवालीक बेटा नकचट्टा ताड़ी पीब कऽ दुआरिपर आबि गेल छै। ओ निसाँमे गरजि रहल छै।

“हमरा दुआरिपर एतेक लोक किएक जमा भेल छै हौ? बुझै छी, ऐ औरतियाकँ। सनकल जा रहल छै। हम घरपर नै रहै छी तँ छौड़ा सभकँ सोर पाड़ि कऽ रसलीला करैत रहैत अछि। कहाँ छै हमर मोटका समाठ बला लाठी। आइ डाँड़ आ पीठी सरका देबै हम।”

अगिनदाय डरसँ कोठी गोड़ा तरमे नुका रहल अछि। पता नै देहपर लाठी केतए-केतए गिरतै। रोइयाँ काँटो-काँट भऽ रहल छै।
उचितवक्ता दुआरिपर सँ बिदा होइत बजल-

“अजय भाय, चलह ऐठामसँ। नै तँ समाठसँ चूड़ा जकाँ कूटल जेबह।”

सभ धड़फड़ा कऽ चलि पड़ैत अछि। अजय देखैत अछि।
आसमानसँ चुगला गिरैत अछि। धरती दिस बढ़ैत इजोतक रेखा। चारूभरसँ अन्हार ओकरा दिस दौगल। छनेमे जेना ओकरा पकड़ि घोंटि लेलक। फेर आँखि अन्हारेमे अछि, इजोतक प्रतीक्षा करैत।

❍❍❍

जनीजाति सभ अँगनामे गाबि रहल अछि।

“बाबा केँ अँगना मे लगनहि आएल

पोती भेल डुमरी केँ फूल हे

ऐ बेर लगनमाँ फिराय दियौ बाबा

सिखऽ छिऐ लूरि बेवहार यौ।”

अकलू मड़रक बेटीकेँ बिआह हेतै। बरयाती आबि रहल छै। दुआरिकेँ केते चिक्कन-चुनमुन केने छै। लगै छै जेना चनन छिटका देने हो। तेतेक इजोत चमकै छै जे अन्हार तँ जेना निपत्ता भऽ गेलै। दुआरि आ अँगनाकेँ सभ चीज दोसरे रंगक लगै छै। चमाचम।

एककातमे भनसिया सभ अहरी चढ़ा देने छै।

“पहिने भात नै, तीमन बनतै। पानि ला रे।”

“भैया, एक चिलम गाजा हमरा घरबारीसँ मंगा दे तँ हम भरि राति खटबौ।”

“चुप, दारू, गाजा पी कऽ भानस करता। नूनक बदलामे चीनी ढारि देबही। तब की हेतै?”

किछु लोक भोजन-भात बना रहल अछि तँ किछु लोक बरयातीकेँ सूतए आ बैसए लेल बेवस्था कऽ रहल अछि।

धिया-पुता सभ दलानक आगूमे खेल रहल छै। किछु नाँगट-उघार तँ किछुकेँ देहपर बस्तरो अछि। नाकमे नेटा, सुर-सुर करैत।

“भैया मुतबै हौ।”

“चुप सार, तोरा तुरत्ते मुतबास लगि गेलौ।”

“तँ परसादी मँगा दे।”

“भगवानक पूजा नै हेतै। एकरा अँगनामे बिआह हेतै।”

“हे रे छौड़ा, ऐठाम लगही कऽ देलही।”

बुढ़बा लाठी लऽ कऽ फटकारैत बजल-

“भाग दुआरपर सँ। निच्चाँ जा कऽ खेल।”

अँगनामे गीत गौनिहारि सभ उपरौंझ कऽ रहल अछि। पहिने तँ एकोटा जनीजाति एबे ने करै छेलै।

“जातिसँ अलग। ढाढल बान्हल छै- अकलू मड़र। ओकरा संगे के जाएत बन्धनमे पड़ैले।”

अकलू मड़रक स्त्री बड्ड चलाकी जनै छै। टोलक मूलगनि घुघुरबत्तीकँ पटिया लेलकै।

“दाय हे, जेहने हमर बेटी तेहने तोहर बेटी। कोनो तरहेँ पार-घाट लगा दहक। दोसरा गामकसँ लोक सभ आबि रहल छै। अपना गामक इज्जतिक सबाल छै। अपना टोलक गप आन लोक किएक बुझतै। रहबै तँ एकेठाम।”

केना कऽ मानतै औरतिया सभ। आखिर सुख-दुखमे एकसाथ रहैत आएल छै।

“नदिया किनारे बाबा हौ किनकर बाजा बाजै,
किनकासँ माँगे दहेज हौ,
नदिया किनारे पोती तोरे बाजा बाजै
हमरासँ माँगे दहेज गे...।”

डिम-डिम-डिमिक। ढोलक आ पीपीहीक अवाज।

“आरे तोरी कऽ बराती तँ गामक बगलमे पहुँच गेलौं। जल्दी सभ प्रबन्ध कर रौ।”

“इह, कोनो लाट साहैबकँ बरयाती नै आबि रहल छै।”

“सुनै छी, जे दू बीघा जमीन छै।”

“दू बीघा जमीन छै आ सात भाँइ छै। फेर सातोकँ दू-दूटाक धिया-पुता। अँगनामे बेदराक ढेरी लगल छै।”

“सुनै छी, लड़िका घरक छप्पर बनबैमे तेज छै। लाड़-पुआर बत्तीक छप्पर। तँए खेतीक अलाबे किछ आमदनी भऽ जाइ छै।”

“बुझलौं- घरमे फुइस-फाइस बाहरमे धक्का।”

अँगनासँ गीतक अवाज-

“सोनाक पिंजरा बना दऽ हौ बाबा,

ओइमे रहब नुकाय हौ।
सोनाक पिंजरा बना देबो गे पोती
पिंजरा सहित नेने जाय गे...।''

बुढ़बा सभ अपना पगड़ी आ धोतीकेँ ठीकसँ बान्हैत अछि। ढोल-पीपही आ स्पीकर जोर-जोरसँ बाजए लगल। लोकमे हड़बड़ी मचि गेल छै। समाजक लोक दुआरिपर एकट्ठा भऽ रहल छै।

''बरयाती आबि गेलै। चलै-चल सुआगतमे। खाना-पीना बादमे हेतै। सुआगतमे तिरोटी नै हेबाक चाही।''

''हँ, ठीके गप। दोसरा गामक लोक, अरिजन-परिजन, कुटुम। ओकरा ढाठ बान्हसँ की मतलब।''

''हँ हँ, आखिर हमरो धनुकटोलीक किछ शान छै।''

''अरे तोरीकेँ, नाचक पाटी लौने अछि।''

''हँ, लगही आ झाड़ासँ टोलकेँ महकौतौं।''

''ई सार तँ नमरी लोफर छै। धियाने दोसरे तरफ।''

उचितवक्ता मुड़ी डोलबैत बजल-

''असल गप अहिना भकभका कऽ लगै छै। सावधान, नाच देखैते चिड़ै कोनो छौड़ा संगे उड़ि ने जाऊ।''

''चुप्प, शैतान।''

डेढ़ियापर जनीजातिक भीड़। वर देखबाक सबहक आँखिमे उत्सुकता। रंग-बिरंगक साड़ी-आँगी पहिरने। फूल सन फुलाएल मुख। चहकैत छौड़ा सभक दल। पैंट-शर्ट, लुँगी-कुरतामे सजल। बूढ़ सभ धोती-कुरता आ माथकेँ गमछासँ मुरेठा बन्हने।

''पहिले पएर-हाथ धोइले जलक बेवस्था करह। पूछि लहक सभ बरियाती आबि गेलै।''

''दुल्हा नै आएल छै?''

''आरे बहींचो, बिना वरक बरियाती आबि गेलै हौ। बिआह केना हेतै?''

“कहै छै- गामसँ संगे-संग चललौं। रस्तामे पछुआ गेल। पता नै केतए रहि गेलै।”

“छुच्छै धुतहु फूकै छेलै रे। बिना दुल्हेक घर-दुआरि। दुआरिपर आएल किएक? मार सार बरियाती सभकेँ।”

“ऐमे बरियातीक कोन दोख?”

“हे रौ ला तँ सटका। दोष-गुणकेँ फरिछाबै छथि।”

“हे रौ, मनकेँ थिर करै जो। ठहर, एना नै करै जो।”

बरियाती सकदम। जेना सबहक छातीमे डर ढुकि गेलै। सभ मुँह लटका लेलक। गप-सप्प बन्न। मने-मन सभ सोचि रहल अछि। कहीं भरि राति वर नै एतै तब की हेतै? एहने स्थितिमे बरियाती सभकेँ छौलका छोड़ेने रहै, ढेलपुरा गाममे। चलाक बरियाती धोतीकेँ डाँड़मे खोंसि रहल अछि। पछुआरक रस्तो भँजिया रहल अछि। रंगमे भंग। तमाकूल-बीड़ी सभ बन्न। अँगनामे गीतनादक बदलामे फुसराहटि शुरू भऽ गेल छै।

“लीलाक भाग्ये खराप छै। केतेक मेहनति अकलू मड़र केलकै तब सभ चीजक इतजाम भेलै। दू बरिससँ बेचारेकेँ एड़ी खिआ गेलै तब जा कऽ बिआहक बात तँइ भेलै। आब देखियो...।”

“छठी राति विधि लिखे लीलारा
की संकट के मेटनहारा।”

बात सुनि लीलाक कलेजामे जेना बरछी भोंका गेलै। ओ मुँहमे नुआ ठूसि कऽ कानि रहल अछि। लोकक मनमे शंका औना रहल अछि।

कहीं लेन-देनमे कोनो गड़बड़ी तँ नै भेल छेलै। अकलू मड़र छै- बड़ा मक्खीचूस।

“तीमन-तरकारी बनेबै की नै?”

“धुर, छोड़ि दियौ। की हेतै की नाइ।”

उचितवक्ता केना चुप रहतै।

“कानल कनियाँ रहिए गेल कानी कटाओल वर घूमिए गेल।”

“मार सारकेँ रौ। बड़ लबर-लबर करै छौ। एने अकलू मड़रकेँ पाछूसँ निसाँस छूटि रहल छै। आ एकरा...।”

अकलू मड़रकेँ दोस-महिम, कर-कुटुम सम्बन्धी सभ बाध-वोन दिस खोजै लेल निकलि गेल छै।

“हल्लो जे करबै से वरक नाओं जानबे नै करै छी।”

स्टेजपर ढोलक-हरिमुनियाँ चुप्पे पड़ल अछि। नाच पाटीक लोक सभ चुपचाप बिड़ी पी रहल अछि।

“हमरा सभ की करबै यौ? एहो लगन ने उधारे रहि जाए।”

“चुप, ओने दोसर नाच भऽ रहल छै। तोहर नाच के देखतौ। बानर जकाँ कूदल घुमै छेँ तखनिसँ।”

नाचक लेबरा चट दऽ बजल-

“सभ तँ बानरेक सन्तान छी आ बानरे छी। हम छी लड़का बानर।”

“हे, मुँहकेँ चुप राख नै तँ..।”

“गौ बाबू आदति नै छौ। पेट फूलि जाएत।”

अकलू मड़र सोचि रहल अछि- एक तँ जाति आगि-पानि बन्न कऽ देने अछि। जखनि कि हमर कोनो दोष नै छेलए। भैया मरि गेल छला। घरमे कुछो नै रहए। ऊपरसँ अकालक तबाही। केतएसँ करितौं भोज? लोक कहलक खेत बेचि।

कहए पड़ल- खेत बेचि लेबै तँ खेती केतए करबै? केतेक जमीने छै हमरा पास।

दोसरकेँ दुख देखबाक फुरसति केकरा पास छै? सभकेँ तँ अपने दुख भारी छै। अपने सुआरथमे आन्हर। तैयो टेबैत, हथोरैत कहुना चलि रहल अछि।

एक साँझ भोज-भात हेतै आ हमर सभ किछो बिका जेतै।

मुदा कहाँ कोइ सुनलक हमर गप। ओही दिन जातिसँ अलग कऽ देलक।

केतेक मेहनति केलौं। केकरा-केकरा नै गोड़लग्गी केलौं। कोन-कोन जानवर लग ने माथ लगेलौं। तब बिआहक गप निश्चित भेल। ओहोमे कोन दुसमनी लगि गेल से पता नै। वर बाटेमे बिला गेल। के की केलक से नै जानि। सभ तँ दुसमने अछि।

वर नै आएत तँ हमर बेटी कुमारि रहि जाएत। दोसरठाम बिआहक गप्पो नै होएत। लोक सोचत लड़कीमे कोनो खराबी छै। बाप रे बाप, कोन उपए हेतै। केतौ कऽ ने रहबै- हम। सभटा खरच-बरच बेकार चलि जेतै। फेर दोबारा केतएसँ एतेक टाका-पैसाक बनोबस करबै। अफवाह फैलत- बिआहमे कोन नाटक भऽ गेलै रौ।

केकरो सोझहामे केना जाएत। अकलू मड़र अन्हारेमे बैसि कऽ कानि रहल अछि।

लोक सभ वरकेँ खोजि-खाजि कऽ आपस आबि रहल अछि।

"केतौ नै भेटलै। बड़की सड़क तक केतौ नै छै।"

"चारि-पाँचटा छौड़ा बौआ रहल छेलै। लग जा कऽ पुछिते पड़ा गलै। गुँहे-मूते दौगैत अपने गाम दिस आएल।"

सभ निसाँस छोड़ैत अछि।

वरक काका चिचियाइत अछि-

"आबि गेल। आबि गेल- दुल्हा। केतए रहि गेल छेलही, तूँ सभ रौ।"

हंस पलटि गेल-समधीक। सबहक आँखिमे उत्सुकता। शान्त पोखरिमे हलचल। लोकक देहमे जेना गति आबि गेलै।

नाच-मंडलीक कलाकार फानि कऽ स्टेजपर चढ़ि गेलै। ढोलक-हरमुनियााकेँ जेना परान घूमि गेलै।

औरत-सभ खखसि कऽ गला साफ कऽ रहल अछि। तरे-तर।

"लीलाक माए जल्दी सभ किछो तैयार करू। चुमबैले। समए नै छै।"

"चलू, पहिने लड़िका देखबै।"

ग्रामीण सभ जमा भऽ गेल छै।

"समधि कहाँ छै?"

''समधीकेँ रतौनी भेल छै। कम सुझै छै।''

''अहाँक बेटा कहाँ अछि? कानमे तँ लंगोटा बन्हने छै- सुनतै केना।''

''हेयौ दुल्हा केतए छै?''

बरियाती सभ चारूकात सँ घेरने अछि। बीचमे चारि-पाँचटा छौड़ा ठाढ़ अछि। ओकरा देहपर कछी-जंघिया मात्र अछि। उघारे देह-जाड़सँ सुटकौने। मुँह लटकौने।

दुल्हाक काका हाथसँ इशारा करैत छै।

''वएह छी वर। जेकरा देहपर ललका जँघियाटा अछि।''

उचितवक्ता फेंफिया कऽ बजल-

''अरे तोरी कऽ। हौ, ओइ गामक एहने रिवाज छै। नंगा भऽ कऽ अहिना उघारे बिआह होइ छै। नंगटा कहीं के...।''

''सभ खचरपन्नी समधीक छी। दहेजबला सभटा टाका-पैसा अपना मौगीक पछुआरे रखि कऽ आएल अछि।''

''हँ हौ, बेटाकेँ कछी-जंघिया पहिरा कऽ कुश्ती लड़ैले ठाढ़ केने अछि।''

सभ ठिठिआ कऽ हँसल। हा... हा... हा.. ही... ही...।

''हे रौ हमरा तँ लगै छौ, भैंस-गाए चरा कऽ बाधसँ ऐठाम चलि एलौं। देखहक तँ कपारमे एको बून तेल छै। बिआह हेतै, कोनो खेल नै हेतै। दसटा ग्रामीत देखतै।''

''माथपर मौड़ कहाँ छै हौ?''

''चुप रह, मौड़ की देखबहक। घौड़ देखहक। बेटाबलाकेँ संतोष रहै छै हौ। दैत रहक।''

समधी तरे-तर तामसे फुलल अछि। बेटाक हालति देखि बजत की। अन्तमे घोंघिया कऽ बजल-

''जखनिसँ दुआरिपर पएर रखलौं तखैनेसँ सभ ओल सन बोल बजि रहल अछि। आँत छुबौआ बात। जेना हमर कोनो परतिष्ठे नै।

मनुखक बेवहार एहने होइ छै की? सभटा बकटेटिया आ लंठाधिराज जमा भऽ गेल अछि। बेसी तामस चढ़त तँ लड़िकाकेँ लऽ कऽ चलि जाएब। सबहक जेना मगजे उनटल छै।''

कालू मड़र बीचमे आबि कऽ सम्हारैत अछि।

''सभ बकटेटे जकाँ गप नै करहक। एकरा सबहक संगे की भेलै सेहो तँ बुझबहक।''

समधी अपना बेटासँ पुछै छै-

''की भेल रहौ बौआ?''

दुल्हा ठोह पाड़ि कऽ कानए लगैत अछि।

उचितवक्ता ठिठिआ कऽ हँसए लगल।

''कनियाँ बिदागरी कालमे कानै छै। ई केहेन वर छै जे सासुर अबिते काल कानि रहल छै मौगी जकाँ।''

''पहिने सुनि लहक गप।''

''हमरा सभ टाएर-गाड़ीसँ आबि रहल छेलौं। बाधमे सात-आठटा डकैत धेरि लेलक। जेबीसँ सभटा पैसा-कौड़ी छीन लेलक। टाँर्च तँ हाथ मोचाड़ि कऽ पहिने झपटि नेने रहए। दिल्लीसँ कमा कऽ घुमैत काल जे पेंट-शुट कीनने छेलौं सेहो निकालि लेलक। हमरा सभकेँ ठोंठकरिया दैत गाड़ीपर सँ खसा देलक। आ उ सभ टाएरपर चढ़ि बड़दकेँ हाँकि देलक।''

''हम कहै छियौ, निश्चित मूतनमा डाकू हेतौं। आइ-काल्हिमे ऊ जेलसँ छुटल छै।''

''आब लिअ, सुनियौ, सरकार केहेन छै। चोर-डकैतकेँ केतेक छूट दऽ देने छै। केतौ आएब-जाएब मोश्किल। सभ अपने कुरसी बँचेबाक लेल परेशान। गरीबक तरफ धियान के देतै?''

चोर-चहार निशंक भऽ कऽ साँझ-विहान लुट-पाट करै छै। घूसक टाका-पैसा गनैत-गनैत रक्षा करैबलाकेँ पलखति नै भेटै छै। की करतै, आदति पड़ल छै हौ।

''हाय रे, अपने समांग दालि-भात।''

“अच्छा आब ऊ बात छोड़ि दहक दुल्हाकेँ कपड़ा-वस्तर पहिराबह।”

धड़फड़ीमे दोसराक धोती-कुरता वरकेँ पहिरा देल गेलै। देहक नापसँ कुरता नम्हर छै। लड़िका बाबाजी जकाँ लगै छै।
उचितवक्ता ऊपर-निच्चाँ तकैत कहै छै-

“हड़बड़ी बिआह कनपट्टी सिनुर।”

“टाइम नै छै। विध-बेवहार शुरू करह।”

फेरसँ सबहक मुँह हरिआ गेलै। गीत गनगना गेलै। ओने राजा सलहेसक नाच शुरू भऽ गेलै।

“अरे तोरी के, देखहक, तालपर डान्सरकेँ नचैत। जेहने रूप तेहने नाच। आइ खूबे जमतै।”

अखनिओ मनोरथ मड़र नम्हर केश रखिते अछि। जुआनीमे लोक ओकरा नटुआ कहै छेलै।
बिच्चेमे टपकल-

“अरे, ई की देखै छी। एक समैमे हमहूँ नामी डान्सर छेलौं। धनिकाहा गाम नाच-पाटीमे गेल रहियौ। तीन दिनक साटा रहै। भोरेसँ बड़का घरक मलिकाइन सभ कहै- चाह हमरा घरपर बनतै तँ कोइ कहै जलखै हमरा घरपर। मन तँ हमर उड़ल फिरै। लेकिन की करबै अपना घरक मोह...।”

नाच शरू भऽ गेल छै। राजा सलहेसकेँ रिझबैले सती सोलहो सिंगार कऽ रहल छै।

अँगनामे साईत सिनुरदान भऽ रहल छै। झोंकपर गीत कान तक आबि रहल छै।

दुल्हा सिनुर लियौ हाथ, पान-सुपारीक साथ,
दुलहिन उघारि लियौ माथ, सिनुर लए ले। दुल्हाक सिरपर शोभे मोर,
दुलहिन सभदिन पूजत गोड़
दुलहिन उघारि लियौ मांग, सिनुर लए ले।

ग्रामीत सभ नाचक रसमे दुबकि गेल अछि।
गामक झगड़ा-लड़ाइ आ सिनेह-परेमकेँ अजय देखि रहल अछि। ओ कखनो नाच लग जाइत अछि तँ कखनो कोनचरसँ आँगन दिस हुलकी मारैत अछि। चारूभर छड़पटाएल घुड़ैत अछि। किन्तु शीलाक कोनो सुर-पता नै भेट रहल छै। अजय तकैत-तकैत अपस्यिांत।
पछुआरमे केराक बड़का-बड़का गाछ लोके जकाँ ठाढ़ छै। छोटका-छोटका झड़-झाँखुरमे भगजोगनी भुक-भुकाइते रहै छै। ओइ झाँखुरक अढ़मे माटिक ढिमका छै। वएह तँ बनल अछि, दुनूक परेम मिलन स्थल। ओइठाम दुनू गोटे सभ किछु मोन पाड़ैत अछि आ सभ किछु बिसरैत अछि। जहियासँ जोड़ लगैत गहुमन ओइ जगहपर मारल गेलै तहियासँ ओम्हर जेबाक साहस कमे लोक करै छै।
अँगनामे शीलाकेँ कछमच्छी लगल छै। लोकक आँखिसँ बचि कऽ ओइ जगहपर जेबाक कोशिशमे लगल छै। परन्तु काजक अँगना अछि तँए कोइ ने कोइ ओकरा सोर पाड़ि लैत अछि।
पछुआरमे अजयकेँ मच्छर काटि रहल छै। चोर जकाँ रगड़ि कऽ मच्छरकेँ मारैत अछि फेर विचारमे हरा जाइत अछि।
शीला आइ दुलहिन जकाँ सजल छै। केना ने सजितै? ओकरा बहिनक बिआह भऽ रहल छै। छजन्ता छै।
अजय आगूक खत्तामे देखैत अछि। पानिमे चान थरथराइत टहलि रहल अछि।

चन्द्रमाँक बगलमे दोसर चानकेँ उगैत देखि चकोरकेँ चकविदोर लगैत अछि।

“अन्हारमे चोर जकाँ के बैसल अछि?”

“मोन आ दिलकेँ चोरबैबला चोर।”

“हँ ठीके मक्खन चोर।”

अजय आ शीला सहटि कऽ बैसि गेल अछि। दुनू एक-दोसरसँ अर्थहीन गप कऽ रहल अछि। जइमे अर्थ भरल अछि। दुनू तेना कऽ सटि गेल जे लगैत अछि जेना गहुमन साँपक जोड़ी फेर जोड़ लगल। लोभ फोंफिया उठल। हाथपर चढ़ि कऽ कामना ससरि रहल अछि।

सुगन्धक स्वरूप बदलि गेल अछि। मुखक लाली चारूभर छिड़िया गेल छै। जेकरा ठोर समेटि रहल अछि। कामना आ परेमक डोरि बढ़ले जा रहल अछि। मन्द बसात सँ केराक गाछ हिलैत अछि। सुखदानक संगे पत्तापर सँ पानिक बून भरभरा कऽ गिरैत अछि।

अँगनासँ कोहबर गीत आबि रहल अछि।

कथी केर मड़बा कथी केरि कोहबर
कथी-केरि लागल केबाड़,
    यौ बिनु बाँसक कोहबर
    सोने केरि मड़बा, रूपा केरि कोहबर
    हीरा-मोती लगल छै केबाड़, यौ बिनु बाँसक कोहबर।

❍❍❍

गामक चौबटिया। असलमे तीनबटियाकेँ सभगोटे चौबटिया नाओं रखि देलकै। दस गोटे जे कहलकै सएह साँच। गाए बाहलै तँ हँ। बड़द बाहलै तँ हँ। की करबै, गामक तँ एहने रूल छै।

पीपरक गाछ तर अजय धिया-पुताकेँ पढ़ा रहल छै। ई गप केतेक दिन टोलबैयाकेँ कहलकै मुदा कोइ धियान नै देलकै। केना कऽ धियान देतै, फुरसत हेतै तब ने। खेती-गिरहस्ती आ बीच-बीचमे सराध-बिआह आबि जाइ छै। फेर पावनि-तिहार। संगहि झगड़ा-लड़ाइ तँ सभ दिन होइते रहै छै। एक-दोसराक टाँग पकड़ि कऽ घिचैक तैयारी। दुसमनक काजमे बाधा नै देल हुए तँ सोझहामे हवा जरूर छोडि देत। दुरगन्धे निकलतै। दोसराकेँ बढ़ैत देखि चुप रहब बड़ कठिन।
एहेन टोलपर अजय धिया-पुताकेँ पढ़ेबाक कोशिश कऽ रहल छै।
लोकक दुआरिपर गप उड़ि रहल छै।

"सरकारी नोकरी तँ भेटलै नै। आब चललै, गामकेँ सुधारै वास्ते।"

"अपना जेना बड़ सुधरल। दोसरो धिया-पुताकेँ निकम्मा ने बना देलक तँ फेर कथीले।"

"बकटेट भऽ गेलै। नै घरकेँ आ ने घाटकेँ। कहै छेलै जे सभगोटे पैखाना कोठली बनाउ। रूपैआ केतएसँ लबतै लोक।"

"बकरी-गाए चरेतै तँ दू पाइक उन्नति करतै, धिया-पुता। जँ अजैयाक सभटा गुण सिखतै तँ समाजमे सभसँ लड़ैत रहतै।"

किछु लोक सभ जगह अलग तरहक होइ छै। ओकर सबहक सोच भिन्न छेलै।

"धिया-पुता उच्चका जकाँ भरि दिन खेलाइते रहै छै। ऐठाम पढ़लासँ फ्रीमे दू अछरक बोध भऽ जेतै। अजैया केहनो छै तइसँ की। काज तँ नीके कऽ रहल छै।"

"लोक सभ किछो कहौ हमरा सबहक धिया-पुता पढ़तै।"

रसे-रस गाछ तरक स्कूल चलतै की, दौड़ए लगलै। आ ढोढ़ाइ गुरुजी तामसे भेर। दियादक संगे अकलू मड़रक पलिवार ढाठल छै। जाति आगि पानि बन्न कऽ देने छै। ओकर छौड़ा बिच्चेमे बैसि कऽ ककहारा पढ़ि रहल छै। अजय कनीकाल लेल कोनो चलि गेल छेलै। ताबे छौड़ा सभ हड़-हड़ खट-खट शुरू कऽ देलकै।

“हे रौ, तूँ तँ ढाठल-बान्हल छी। हमरा सबहक बीचमे किएक एलही।”

“ई केकरो दुआरि थोड़बे छै। ऐठाम किए ने एबै।”

“नै रहए देबौ ऐठाम। भागि जो, नै तँ बापसँ भेँट करा देबौ।”

“बापक नाओं लेबही।” “चटाक-फट्ट”

“दुनू तरफसँ थप्पर-मुक्का शुरू भऽ गेलै। पेंट-गंजी फटि गेलै। ठोरसँ खून छड़-छड़ बहए लगलै। छौड़ा कनैत अँगना दिस भगलै।”

अजय तेजीसँ पहुँचल। सभकेँ फटकारैत पाँतिमे बैसौलक। ओकरा सबहक दिस तकलक।

सभटा बनैया धिया-पुता सन लगैत अछि। हजारोक भविस अन्हार दिस जा रहल छै। बचेबाक प्रयासमे अपनो भविस अन्हारमे चलि जेतै। बलिदान तँ करए पड़तै। प्राप्त करबाक लेल किछु हरा जाएब स्वभाविके छै।

अकलूक पितियौता भाय रामरती मड़र गरजैत आबि रहल छै।

“ई झटकूक बेटा माहटर बनि गेलै। खूनियाँ माहटर। ठीके कहै छेलै, ढोढाइ गुरुजी- हम तँ धान-चाउर लऽ कऽ पढ़बै छेलौं। मुदा अजैया खून लेत।”

“की भेल मड़र?”

“ई कालू मड़र, सार अपनाकेँ लाइट सहैब समझै छै। अपना धिया-पुताकेँ सनका देलकै। धरहा कुत्ता जकाँ लोककेँ कटने फिड़ै छै। हमरा छौड़ाकेँ अंगा फाड़ि देलक। मारैत-मारैत खून बोकरा देलकै। ई

बहींचो मैनजन छी आकि काल। ओकरे धिया-पुताकेँ आइ हम थकुचि देबै।''

कालू मड़र ओमहरसँ अबै छेलै। गारि सुनिते गरजैत कहलकै-

''ऐ रामरती, मुँह खाली नै कर। मरदक बेटा छेँ तँ हमर कोनो बेदराकेँ हाथ लगा कऽ देखही। ओहीठाम हाथ काटि देबौ।''

कुत्ताक झुंड एक दोसरपर भूकए लगलै। धिया-पुता सभ किताब लऽ कऽ पड़ाएल।

''भाग रौ खून खतरा हेतौ। दूनूक दियादवाद लाठी-भाला लऽ कऽ निकलि गेल छै। टोलमे हड़कम्प मचि गेलै।''

मुँहपुरुख सभ बीच-बचाव कऽ रहल छै।

''आपसमे किएक लड़ै छी। सबूर करू। शान्त रहू मड़र। गपकेँ नै बढ़ाउ।''

ढोढाइ गुरुजीकेँ दाउ सुतरि गेलै। फेर क, ख, पढ़बैक बदला एक बोड़ा धान लेतै। कुदि कऽ आगाँ अबैत बजल-

''सभटा नाटक अजैया कऽ रहल छै। झगड़ाक जड़ि।''

दुनू पक्षकेँ लोक सभ ठेल-ठालि कऽ हटा देलकै। असगरे अजय गाछ तर ठाढ़ अछि।

गाछसँ स्वर निकलि रहल छै- एकटा बिआसँ हमर जनम भेल। छोट-छीन बीआमे नुकाएल छेलौं। बाहर एलापर हजारो बिआ हमरासँ निकलि रहल अछि। एकसँ अनेक। हमरा छाँहमे केतेक जीव-जन्तु सुखक निसाँस लऽ रहल अछि। तैयो हमरेपर झटहा...।

❍❍❍

१५

धनुषधारी मड़र टोलबैया सभकेँ जातिक गौरव-गाथा सुना रहल छै।

“है यौ, जीबू झा हमरा छोटा जाति बुझैत अछि। हम सभ तँ मगधक धनुष धारण करए बला जाति छी। हमरा सबहक जातिमे की नै अछि। ऐ जातिक केतेको नेता देशकेँ स्वतंत्र केलक। आइओ मंडल नेता अपन अलग पहिचान बनौने अछि। जातिक देवता बाबाक स्थान मगहमे छै। सुनै छी जे महतो बाबा जीवान्तेमे समाधि नेने रहथि। तँए ऐबेरक एलेक्सनमे मंडल सभकेँ सोचबाक चाही जे केकरा जीतौलासँ हमर जाति आगाँ बढ़त।”

“मड़र, जनौ आब निकालि लिअ।”

“किए यौ, हमर वंशज कोनो छोट अछि।”

“धूर अहींक जातिक फुलचनमा एकटा नचनियाँ छौड़ी संगे भागि गेल।”

“कहिया यौ?”

“दस-पनरह दिन पहिने। बाप तँ दिल्लीमे कमाइ छै। सुनै नै छी- ओकर माए बोमिया रहल छै।”

“चुप रह, एक-आध परशेंट सभ जगह अहिना होइ छै। तइसँ की लोक छोट भऽ जाइ छै।”

❍❍❍

“बाँन्हल जूड़ा खुबीए गेल, नयना नोर चुबै हे
ललना रे दरदेसँ मन भेल बियाकुल किनका जगाएब हे...।”

स्त्रीगण गीत गाबि-गाबि धान रोपि रहल अछि। मरद सभ तँ पंजाब दिल्लीमे खटि रहल छै। औरत सभ काज नै करतै तँ खेती-पथारी नै हेतै। औरत सबहक खुशामद करए पड़त आब।
गिरहत पाछूसँ कहैत छै-

“पाँति सोझसँ लगा। बिराड़कँ पूरा गाड़ि दीहैक। हाथ तेजीसँ चला।”

“चुप रह मौगा-गिरहत।” घुनघुनाइत स्वर।

औरत सबहक धियान गीतपर छै। ओइ सूरपर हाथो चलि रहल छै।

“पूर्वा जे बहै झलमल हे ननदि
आब पछिया बहै मधुर हे
ननदि भौजाइ मिलि पनिया लँ गेलै
जमुनामे उठि गेलै बाढ़ि हे...।”

“चुभ्- चुभ...।” कतारमे धानक बिराड़ माटिक सहारासँ ठाढ़ होइत! माटि-पानि-प्रकाश-बीआ-प्रगति- निरन्तर विकास!
आड़िपर सँ एक गोटे हल्ला करैत छै-

“झटक लाल मड़र स्वर्ग सिधारि गेला। दाह संस्कारमे शामिल हेबाक लेल हकार देल जा रहल अछि।”

“करनी देखबै मरनी बेरमे।”

“ले सभ काजपर बज्जर गिर पड़लौ। अखने मरबाक टेम छेलै।”

“रोपनी टाइममे तँ लोक लहाशोकँ झाँपि दइ छै- औछाओन तरमे। की करबहक चलह-चहल।”

❍❍❍

कालू मड़रक दुआरिपर जातिक बैसकी भऽ रहल छै।

“भोज तँ लोक अपना मनसँ करै छै। ऐ मे दोसर गोटे की कहतै।”

“सुनै छी जे ऐ टोलपर केकरो पुरखा भोज केने रहै। केतेको सभा नोतल रहै। पहाड़ सन भातक गंज। ऐ पारसँ ओइ पार। किछु ने देखा पड़ै। आधा मील तलक लोक पाँतिमे बैसल रहए। जे धिया-पुता हरा गेलै से दू दिनपर भेटलै। रेलबे कातमे भोज भेल रहै। रेलक डरेबर, गार्ड उतरि गेलै। अंग्रेजीमे पुछए लगलै। लोक पातपर दालि-भात देलकै। खुशी-खुशी खेलकै। ओइ समैमे सम्पति अपार रहै। दिल विशाल रहै। इलाकामे चरचा बहुत दिन तक होइत रहलै- हँ भैया धानुको जातिमे महाभोज चौड़ासी होइ छै। आब तँ फूटहा खा कऽ लोक जीबैत छै। कहाँ राजा भोज...।”

“बजहक जागेसर केतेक गोटेक भोज करबहक?”

“हमर हालति तँ बड़ खराप अछि, तैयो हम जातिसँ बहार नै छी।”

“हौ एकर बाप तँ लोककैँ खेत-पथार बेचा देलकै। एकरा केना छोड़ि देबै। अजैयाक टेरही अही बेर तोड़ि देबै।”

“भोज नै देतै तँ जातिसँ अलग कऽ देबै।”

कालू मड़रक धियान जागेसरक पचकट्ठा खेतपर छै। टक लगौने छै केतेक दिनसँ।

धरमानन्द बाबूक धियान जागेसरक चरका बड़दक जोड़ीपर छै। बेचैए पड़तै। जेतै केतए।

“हँ, हँ रूपैआ-पैसा भऽ जेतै। बहुत कमा कऽ रखने छै- झटकलल मड़र।”

“समाजमे किछु हैसियत देखाबए पड़तै।”

“हँ हौ बिना भोज केने स्वर्गक दुआरि केना खुलतै।”

“अठगामा लोककेँ नोति दहक। आखिर ओकरे अरजल सभटा खेत छै।”

अजय बीचमे आबि बजैत अछि।

“दबाइक अभावमे हमर बाप मरैत रहए, तँ केकरा पासमे रूपैआ नै रहै। पैंच, रीन कियो नै देलक। आइ सबहक लग रूपैआ छै। हम बुझै छी राजनैति हम भोज नै करबै।” कहैत, जातिक बैसकीसँ उठि चलि देलक।

“हे हे एना नै बजहक।”

“आ रे तोरी कऽ सबहक मुँहमे टाटी लगा देलकै। ठीके छै। जहिया जातिक चोटपर चढ़तै तहिया बुझतै।”

सब किछुसँ किछु बजैत तामसे गुम्हरैत चलि देलक।

❍❍❍

खेलावन भगत चौबटियापर चक्कर पूजि रहल छै। एकाश दिस तकलकै। लगलै जेना अधरतिया भऽ गेलै। ओना तँ साँझो-परात लोक एनए नै अबै छै तँ रातिक कोन गप। लोककेँ डर पैसल छै- जे सुनहटमे बाधक चौबटियापर मुँहरगड़ा प्रेत रहै छै। एक दिन उचितवक्ताक कक्का चोटपर चढ़ि गेल रहै। खून बोकरैत-बोकरैत आँखि उनटि गलै। के जानि-बूझि कऽ आगिपर टाँग राखत।

"जानि बूझि नर करै ढिठाइ...।"

किनकर मैया बाघिन जनमे। केकरा ओतेक हिम्मति छै जे एमहर एतै। खेलावन भगत पूरा निचेन अछि। ओकर आँखि अड़हूल फूल जकाँ लाले-लाल भऽ गेल छै। धोतीकेँ डाँरमे कसने अछि। चाकड़-चौरठ देह, नंग-धड़ंग।

आगूमे सजावटिक संग पसरल अछि। अड़हूल फूल, अरबा चाउर सिनूर। एक कातमे मनुक्खक खोपड़ीक कंकाल, दाँत किचने। धधकैत आहूत। पाँतिमे जरैत दीप।

धूमन आ घी जोरसँ झोंकैत अछि। तँ आहूत धधकि उठैत अछि। निशिभाग अन्हरिया रातिमे धरमडीहीवालीक चेहरा चमकि उठैत छै। नमरह-नम्हर खुगल केश। पैघ-पैघ आँखिमे नीनक छाँह। जेना निशाँमे मातल होइ। अधभिज्जू साड़ीसँ देहक किछु भाग झाँपल, किछु भाग उघाड़। बन्न होइत आँखि खेलावनक गर्जनसँ चौंकि उठैत अछि।

"जय काली-वन्दी-जोगनी
भद्रकाली-कपाली...।"

आगूमे जरैत दीप दिस ताकए लगैत अछि।

"ओने नै एमहर देख। धधकैत आगि दिस।"

खेलावन गरजैत अछि-

"जेना कहै छियौ तहिना करैत जो। हमरा औडरकेँ अवहेलना करबै तँ अलटरबाकेँ स्त्री जकाँ सौंसे देह आगि धधकि उठतौ।"

धरमडीहीवालीक ठोर सुखा रहल छै। बजतै से सट्टा नै छै।

“नै यौ भगतजी। जहिना कहबै तहिना करबै।”

“हँ, करैत जो। तइमे कल्याण छौ। जय काली।”

ऊपर दिस तकैत चिचिया उठैत अछि।

“गे छुलही गात छोड़ नै तँ जरा कऽ भसम कऽ देबौ।”

भगत आँखि गुड़रि धरमडीहीवाली दिस तकैत अछि।

“एमहर देखि, हमरा दिस। मुँह किए गाड़ने छँ। कलशा कऽ जल उठा कऽ पी ले।”

“आब हम नै पी सकब। हमरा बुत्ते नै हएत। घंटा भरिसँ तँ पीते छी- घोंटे-घोटे। गलामे जलन भऽ रहल अछि। देहम जेना आगि नेश देने अछि। निन्नसँ आँखि बन्न भऽ रहल अछि। लगै छै जेना आसमानमे उड़ि रहल छी। कहीं बेहोश भऽ जाएब तब।”

“चुप छुलाही देखै छी- ब्रह्म पिशाचक देल बेंत। ऐसँ अखने...। मन साधि कऽ। पी ले। इलाज भऽ रहल छौ तँ राति भरि कष्ट हेबै करतौ।”

डरे थर-थर कापैत धरमडीहीवाली कलशा उठा कऽ मुँहसँ लगा लेलक। साड़ी छातीपरसँ ससरि गेल। भगत जीक आँखि नाचए लगल। कामनाक चिल्हौड़ सुनहट पाबि गन-गना कऽ उड़ए लगल। स्पर्शक लेल हाथ आतुर भऽ गेल। मन बन्धन मुक्त भऽ बनमे बौआए गेलै।

कलशाक बँचल नीरसँ अपन पियास मेटबए लगल।

श्राद्ध कर्म एक मास पहिने बीतलै। तहियासँ अजय गपकेँ भँजिया रहल छै किन्तु कुछो पता नै लगि रहल अछि। ओकर भौजाइ कखनो जोगनी जकाँ प्रगट भऽ जाइ छै तँ कखनो भूत जकाँ अँगनासँ निप्पता भऽ जाइ छै। परसू शीलाक गपसँ ओकर माथा ठनकल जखनिसँ धर्मडीहीवाली आ भगतक खिस्सा ओ सुनलक तखनिसँ जेना ओकरा देहमे आगि नेश देलकै।

“अरे तोरी के। पूरा टोलकेँ सुधारेबला ठीकेदारक घरेमे भोंकार। लोक मने-मन कहैत हेतै- अपन घर-पलिबार सम्हरबे नै करै छै आ दोसराकेँ उपदेश देने घुड़ै छै। पर उपदेश कुशल...। अँगना लेल तँ अजय बेकूफ छै। पता नै खेलावन भगत की भरने छै दिमागमे।”

साँझेसँ अजय अपना भौजाइक चमक-दमक देखि रहल छै। बिना कारणे टिटही नै लगै छै। अजय ओकरेपर नजरि गड़ौने छेलै। किन्तु छनेमे छनाक। कखनि निपत्ता भऽ गेलै।

अजय टाँर्च लेलक आ सभ घरमे इजोत घुमेलक। कहाँ छै केतौ। दुआरिपर ओकर भाय जागेसर खोंखिया रहल अछि। अजय सोझे दौगल-गहवर दिस। हाय रौ तोरी। भगत गहबरसँ पार भऽ गेल छै। केतए हेतै? शीला चौबटिया परक नाओं कहने रहै।

घोड़ा जकाँ दौगल अजय। हकमैत चौबटियापर जूमि गेल। आगूमे देखैत अछि। खेलावन भगत धरमडीहीवालीक साड़ी खोलि रहल अछि। एहनो हालतिमे धरमडीहीवाली साड़ीकें भरि मुट्ठीसँ धेने अछि। चीरहरण सफल नै भऽ रहल अछि।

अजय लपकि कऽ भगत जीक बेंत उठौलक आ तड़ा-तड़ि खेलावनक पीठपर बरसबए लगल।

ऐ अप्रत्याशित आक्रमण लेल भगत तैयार नै छल। ओकर दिमागक काज जेना बन्न भऽ गेल। तैयो पलटि कऽ गरजल-

''के छैं? आइ जरा कऽ तोरा राखए कऽ देबौ। जय माँ काली...।''

अगिला शब्द ओकरा मुँहसँ नै निकलि सकल। फटा-फट बेंत ओकरा कपारेपर खसए लगल। छड़-छड़ा कऽ कपारसँ लहू बहए लगलै। माथ पकड़ने पड़ेबाक कोशिश केलक। धधकैत आहूत अजय ओकरा देहपर उझलि देलकै।

''हौ बाप हौ। गे माइ गे।'' डिरिया उठल।

अजय पाछूसँ गरजल-

''ठहर सार, आइ सभटा तंत्र-मंत्र तोरा पाछाँसँ भीतर ठूसि दइ छियौ।''

''हौ बाप आब मरि जेबइ हौ।''

कहैत लंक लऽ कऽ भागल भगत।

अजय किछु दूर रेबाड़लक। फेर आपस आबि धरमडीहीवालीकेँ सम्हारि कऽ उठौलक कहुना घिसियाबैत टोल दिस चलि देलक।

❍❍❍

सौंसे टोल खबरि गनगना रहल छै। केतेक गोटे अधरतियासँ जगले रहि गेल। केतेक गोटे अधरितियासँ जगले रहि गेल।

डर केना नै हेतै? सौंसे टोल निशिभाग रातिमे भूत कहरै छेलै। कुहरौआ भूत।

डिबिया नेस कऽ लोक समए कटलक। गाममे कोनो बिजली बड़ै छै। डरे अन्हारमे केतेक लोक अँगनेमे लगही केलक। कथाी छी कोन ठेकान। कहीं ऊपरेसँ झपटि लेत तँ जुलुम भऽ जाएत। राति-बिराइत के केकरा देखै छै। सभ दूरेसँ 'हो-लगऽ-लगऽ' करत।

किछु हिम्मतगर छौड़ा सभ भिनसरबेमे बाहर निकलि गेल। टोह लऽ रहल अछि जे कुहरैक स्वर कोन दिससँ आबि रहल अछि। सबहक अनुमान अछि जे अकलू मड़रक पछुआर चोटाह छै, जैठाम जोड़ लगैत गहुमन मारल गेल, आही झँखुरा दिससँ अबाज अबै छेलै।

अखनी अन्हार पूरा फरीच्छ नै भेल छै। ओम्हर जेबामे साँप-कीड़ाक सेहो एकटा डर। तँए सभ गोटे अकलू मड़र घरसँ पूरब तीन बटियापर ठाढ़ अछि।

पछुआरक ऊ जमीन शाइत परती अछि। तब ने कोइ नै जोत-कोड़ करैत छै।

धुर, हमरा तँ बुझाइत अछि जे केकरो डीह-घराड़ी पहिने छेलै।

हे रौ, धरमानन्द बाबू पोखरि दिससँ आबि रहल छै। ओकरेसँ पुछल जाए।

हे यौ, अकलू मड़रक पछुआरबला जमीन किएक परती जकाँ पड़ल रहै छै?

धरमानन्द बाबूक पएर ठमकल।

छौड़ा सभ दिस तकैत बजल-

''बूझल नै छह- जोतबैया बिना खेतबा पड़ल परती। दुखन आ शान्ति मड़र दूनू भाँइक घराड़ीबला अछि ऊ जमीन।''

''ओ सभ केतए चलि गेलै?''

“दुखन मड़र बड्ड झगरौआ रहै। झगड़ाबला जमीन खोजि-खोजि कऽ कीनै छेलै। माने झगड़ा खरीदै छेलै। एकबेर पछबरिया टोलक बरियासँ पल्ला पड़ि गेलै। ओ सात भाँइक भैयारी। धिया-पुता हर-हाकिम। तेहेनकँ चपाठलकै जे सभ सेर-सम्पति बिका गेलै। शान्ति मड़रसँ झगड़ा करैले कहै। मगर शान्ति मड़र किए जाएत। मोकदमामे आधा खरचा मँगै ओ नै दइ छेलै। दुखन एक दिन ओकरो कान-कपाड़ फोड़ि देलकै। बेचारे शान्ति मड़र अपन हिस्सा किछु बेचलक किछु छोड़ि-छाड़ि कऽ शहर भागि गेल। सुनै छी जे ओकर बेटा सभ बड़का-बड़का हाकिम बनि गेल अछि।”

“आ दुखन मड़र केतए गेलै?”

“जब रहै धन वित्त नित अबै रे पहुनमा, आब दोस-बोन छोड़लक दुआर।”

खेत-पथार बिका गेलै। सेर सम्पति सभ नाश भऽ गेलै। अन्न पानिक अभाव। धिया-पुता बिलटि गेलै। अनटूटू धिया-पुता दबाइ-दारूक अभावमे मरि गेलै। हौ बाप डुबै छी। हौ बौआ हाथ-पएर चलाबह। एने तँ करम भेल रहै बाम। हौ, आब की कहेबह। शान्ति मड़र जखनि मरलै तँ कफनक कपड़ा आ अछियाक लकड़ी सभ चंदा मांगि कऽ पुराओल गेलै। ओइ दिनसँ ओकर डीह-घराड़ी परती बनल छै। वंशक एकमात्र टीका पंजाबमे बसल छै।”

“हौ, पछुआरमे कही शान्ति मड़र प्रेत बनि कऽ नै बैसल छै।”

“धुर, ई बहुत पहुलका गप अछि। चलू आब फरीच्छ भऽ गेलै। किछु छै आकि सभ निपत्ता भऽ गेलै। देखबो करबै।”

डराइत-धकमकाइत सभ पछुआरमे पहुँच गेल अछि।

“कहाँ छै केतौ किछो। हवामे बिला गेलै साइत। रौ टाँग बँचा कऽ रखिहें। कहीं साँप-ताँप हेतौ।”

“रौ, बिचला झँखुड़ा बड्ड हिलै छौ।”

“रौ बहिं, हइया रौ करिया प्रेत। मरि कऽ पड़ल छौ।”

“भाग रौ जल्दी।”

“ठहर, हमरा ठीकसँ देखि लिअ दे।”

“नाँगटे छै। धोती तँ कटहा झाड़मे फँसल छै। रहतै नै उघारे।”

“हौ बाप ई तँ खेलावन भगत अछि। हौ, दौड़ै जा। देखहक कोन हाल भेल छै। मारैत-मारैत हगा-मूता देने छै।”

“पानि ला रे। छींट मुँहपर। पूरा होशमे नै छौ। भुट वैदकँ सोर पार।”

स्त्री-पुरूष ढेर लगल जा रहल छै। औरतिया सभ नाँगट देह देखिते नाक नुआँसँ मुनैत पड़ाइत अछि।

“मारह मुँह धाय कऽ। हे रौ मुँहझौंसा सभ, पहिने आकरा बस्तरसँ झाँपि देबही, से नै।”

“किए भौजी ऐ सँ पहिने ई चीज नै देखने रही अहाँ?”

औरतिया सभ गारि पढ़ैत पाछाँ घुसकल जा रहल अछि।

“हौ सौंसे देहकँ झड़का देने छै। पीठीपर लाठीक चेन्ह छै।”

“होशमे आबि गेलै। की भेल भगतजी?”

कुहरैत बाजए लगल।

“हौ, असल चंडालिन जोगनीसँ युद्ध भऽ गेल छल। ओहने कसगर भूतक सेना छेलै- ओकरा सँगे। कहुना राति भरि लड़ैत-लड़ैत गामकँ बचेलौं। हमर दशा तँ देखिते छहक। तोरा सभकँ बँचबै खातिर...।”

“आ रौ तोरी के, इएह छेलै कुहरैबला प्रेत। गौआँ-घरूआ तँ उल्टे एकरे मारितै, अन्हरिया रातिमे। लुक्का लऽ कऽ झड़काबैत।”

“हे यौ भगत, अइठाम केना पहुँचलौं?”

“सभटा भूत, जोगनी, देवीकँ मारि कऽ भगा देलिऐ। आपस होइत काल बेहोश भऽ कऽ गिर पड़लौं। ऐ टोलक लेल तँ हम अपन जान अरपन कऽ देलिऐ। आब जाने समाज।”

“धनि छी अहाँ भगतजी। टोलक लोक अहाँक सँग अछि अहाँ लेल तैयार अछि सभ जी-जानसँ।”

“देखहक हौ, धरमडीहीवालीकँ लोक सभ टाँगने जा रहल छै। अजय पाछाँसँ दौगल जा रहल छै।”

“सुनै छी अस्पताल जा रहल छै। पुछलाक बादो किछु नै बजै छै अजय।”

“बजतै केतएसँ। गप्पे हेतै ओहने। जे बजलासँ...।”

अजयकेँ नाम सुनिते खेलावन भगत टन-टना कऽ ठाढ़ भऽ गेल। पछिम दिस चलि देलक।

“हे यौ भगतजी, अहाँ केतए जाइ छी। अहाँक तबीयत बड्ड खराब अछि। चलू गहवर घर पहुँचा दैत छी।”

“नै, हम आब नै ठाढ़ रहब। हम जा रहल छी। हमरा बहुत दूर जेबाक अछि। गुरुसँ भेँट करबाक अछि। वएह हमरा जान बँचा सकैत अछि। नै तँ रातिमे की हएत से पता नै।”

“हे यौ सुनू भगतजी, कनीकाल मोन मारि सुस्ता लिअ।”

“नै-नै आब नै रोकू हमरा। जुलुम भऽ जेतै।”

दुलकी मारैत पछिम दिस चलि देलक। टाँगमे जेना पाँखि लगि गेल हुअए।

आ तहिना लोगोक मनमे जेना पाँखि लगि गेल हुअए।

“रौ, रातिमे सबेरे घरक भीतर बिछौन पकड़ि लीहेँ। साँझे लगही झाड़ि कऽ कऽ लीहेँ।”

“चोर-छीनारकेँ खौब सुतरतै।”

मरद भऽ कऽ मौगी जकाँ किएक गप करै छी। चल, अपन-अपना डेढ़हथ्थी पिजा। रोइयाँ नै भगन हेतै केकरो।”

ईह, बड़-बड़ घोड़ी भाँसल जाए, छोट घोड़ी कहए कहाँ छै पानि।

भोरका सुरूज उगि आएल अछि। पत्तापर सँ ओसक बून चाटि रहल अछि। बसातक ठण्ढीसँ देह सिहरि रहल अछि। चिड़ै-चुनमुनी अहारक खोजमे चलि देने अछि। पानिक जीव सभ पोखरिमे हलचल शुरू कऽ देने अछि जेना। गिरहतक स्वरकेँ संगे बड़दक घण्टी बाजि रहल अछि। टोलसँ ऊपर धुइयाँ उड़ि रहल अछि। सूतल प्रकृति जेना शनै: शनै: जागि रहल अछि। किन्तु ऐ टोलबैयाक माथपर शंका आ डरक छाँह पसरल जा रहल अछि।

❍❍❍

कालू मड़रकेँ अँगनासँ दुआरि धरि लोक सभ सह-सह कऽ रहल अछि। किछु लोक गप हाँकि रहल अछि। गीत-नाद भऽ रहल छै।

''कालू मड़रकेँ अँगनामे
होम होइ छै- जाप होइ छै
होमक धुइयाँ अकास उड़ि जाइ छै।''

अँगनामे औरतिया सभ गीत गाबि रहल अछि। घरमे हवन कुंड जरि रहल छै। होम-जाप भऽ रहल छै। केना नै हेतै। घरपर गिद्ध बैसि गेल रहै। अशुद्ध आ अपवित्तर घरमे केना रहितै।

धड़फड़ीमे एकबेर भुटाय वैद्यक घरमे साँप मरबा लेल छोट जाति ढूकि गेल रहै। ओकरो शुद्ध करबए पड़ल रहै।

ई तँ साफ-साफ घरपर गिद्ध बैसल रहै। भारी अपावन। मरल गाए-मालक सड़ल मासु खाइबला गिद्ध।

पण्डितजी केतेको परकारक लकड़ी मँगोने छै। घी, धुमन, जअ-तिल, मधु सेहो सभ।

होमक धुइयाँ जतए-ततए जेतै। सभ शुद्ध भऽ जेतै।

होमक बाद टोलबैयाकेँ भोज-भात देल जेतै। देखै छहक ने चूल्हा पजारि देने छै। तीमन-तरकारी कटबा रहल छै।

हौ, ई तँ बिना मतलबक खरच भऽ रहल छै ने। आखिर कौआ-पंछीक जखनि डेन दुखा जेतै तँ ओ गाछपर नै तँ चारपर बैसबे करतै। गाछ तँ आब बड़का-बड़का छेबो नै करै।

हे रौ, कौआ-पंछी आ गिद्धमे फरक छै ने। सुनने नै छी गिद्ध मारि गिद्ध करे अधारा...। की यौ साहैब। ओना तँ गिद्धोक संख्या घटि गेलै आब।

धुर छोड़ह, आदमकद भेलासँ आदमी थोड़े भऽ जाए छै।

हँ हँ, तूँ सभ मनुक्ख छहक। और सभ तँ बानरे छै। ओइमे परिवर्त्तन हेबाक चाही।

केतएसँ बिच्चेमे भगतिया सभ आबि गेलै हौ? मैयाक डाली उठि गलै शाइत। केकरो सपन देने हेतै।

हँ हौ, देखै छहक ने सभसँ आगू। डालीमे माइ सजल छै। तेकरा पाछू भगत बेंतसँ इशारा करैत वाक् दऽ रहल छै। सभसँ पाछूमे भगतिया सभ भगति गाबि रहल छै।

...चकमक-चकमक करैत कहमाँसँ एलै हे मैया...।

जेहने झालि बजौनिहार तेहने मिरदंगिया।

सुनहक की कहै छै- भगत।

सुनु हे दाइ-माइ सकले-समाज। हमरा सपन देलक माइ। जे हम सिलौट-लोढ़ीमे परगट भऽ रहल छिऔ। कोइ मसाला पिस कऽ नै खो। पनरह दिनक बाद सभ अपना देव-पित्तर लग माथ लगाबिहेँ। पूजा-पाठ केलाक बादे मसाला पिस कऽ खा सकैत छहक। दस गामसँ माँगि-चाँगि कऽ पूजा-पाठ कएल जेतै। तब देवी माइ खुश हेती।

आब सौंसे टोलसँ चाउर आ रूपैआ माँगि कऽ भगत लग जमा करहक।

परसाल हल्ला भेल रहै जे औरतिया सभ अपना-अपना नैहरासँ लबका साड़ी, चूड़ी पहिरि कऽ सासुर एतै। आ सासुरमे घीसँ भरि राति दीप जरौतै।

तब ने साड़ी, चूड़ीक दोकानदार सभ मालो-माल भेला।

फेर ऐबेर कोनो मसाला कम्पनीबला नाटक केने हेतै।

हौ, शिक्षित नै बनबहक। आर्थिक सुधार नै करबहक। तँ ऐ अन्हरजालीसँ बँचबो नै करबहक। चारूभर तँ अन्हरेसँ घेरल छहक। ओ हो देवी-देवताकेँ तँ निरमान लोके ने केलकै। दोख केकर?

ई अजय एक नम्बरकेँ बकटेट अछि। जेकर धिया-पुता एकरा लग बैसतै सभ बकटेट भऽ जेतै। हम तँ अपना छौड़केँ ममहर पठा देने छी। देवी-देवता किछो नै बुझै छै। अहंकार देखबै छै। नाश हेबाक पहर छै।

एहेन लोककेँ तँ गामसँ भगा देबाक चाही।

तोरा सबहक विचार उनटि गेल छह।

पढ़बहक-लिखबहक नै तँ अहिना हेतह। नया ढँगसँ खेती-वाड़ी नै

करबहक तँ सभ दिन भूखे मरबहक। फँसले रहबहक पुरना जालमे। मरैत-रहअ आ सड़ैत रहअ। मुरुख चपाट।

हे रौ पहिले अपना पलिवार आ कुल-खनदानकँ सुधारि ले। पढ़ा-लिखा ले तब लबरपन्ना करिहेँ। आ बेसी मुरुख-मुरुख कहबेँ तँ अखने...।

ईह उचित कहैत घर झगड़ा।

हाँ हाँ, चुप रहू मड़र।

अस्थिर रहू। की मुँह लगबैत छी। अरे जे जस करै सो तस फल चाखा।

हँ हँ ऐठामसँ चलू। नै तँ झगड़ भऽ जाएत।

होमक काज भऽ गेलै। चलै चलू भोज खेबाक लेल। लोक सभ बैसि रहल छै।

भोज खाइबला पंच सभ पाँति लगा कऽ बैसल छै। केराक पातपर दालि-भात, तीमन-तरकारी परसल जा रहल छै।

हौउ, शुरू करू भोजन।

रौ तोरी के, घी कहाँ पड़लै हौ, बिसरि गेलहक की?

नै यौ, घी तं सभटा होममे जरि गेलै। बँचल रहितै तब ने। सभटा आगिमे डाहि देलहक। ई तँ काबिल लोकक काज अछि। वातावरण केहेन हम-मह करै छै।

सुकरातियेमे तँ टीकमे तेल पड़ैत। कहियो-काल भोजे-काजमे जी कऽ घीबक सुआद मन पड़ैत छल। तहूपर बज्जर गिरल।

जल-ढार भऽ गेलै। झब-झब खा ले। देखै छी ऊपरमे। गिद्ध फेर चकभौर मारि रहल छै।

कहुना केकरो चारपर फेर बैसि जाए।

बैसबे करतौ। जतए एहेन अधरमी लोक रहतै आ देव-पितरकँ निंदा करतै ततए कुछो भऽ सकैत अछि।

दालि-भात आ तीमन-तरकारी पाँते-पाँत दौग रहल अछि।

हौ पानि चला दहक। बक्-बक् गाड़ा लगैत अछि।

आरो तोरी के, भगै जो रौ। फेर कालू मड़रकेँ चारपर गिद्ध बैसि गेलै। देखहक हौ, जुलुम भऽ गेलै। गिद्ध तँ ओँघरा कऽ निचा गिर पड़लै।

हौ, गिद्ध मरि गेलै। दौड़ै जा हौ। सभ देखबाक लेल दौगल। भात-दालि टाँगसँ धँगा गेलै। भोज घिना गेलै।

अधा खा कऽ किए भागल-लोक सभ।

भागत नै तँ गिद्धे जकाँ जान देत। पपियाहा! महा अनिष्ट केलक। तब ने एहेन गप भेलै।

बेमरियाह माल हेतै नै तँ साँप कटलासँ मरल मवेशी हेतै। ओहन बिखाहा मासु खेतै तँ गिद्ध मरबे करतै।

फेर ई दोसरे बात।

आब कोन उपए हेतै हौ देव। हौ समाजक लोक। महा अनरथ भऽ गेलै।

सभकेँ ठकमुड़ी लगि गेल छै। गप कटाबलि चलि रहल छै। किछु डेरबुक सभ ससरलो जा रहल अछि। की हेतै की नै। अँइठ-कुँइठ सबहक देहमे लगि गेल छै। धोइले पहिने।

एहेने समैपर लोक अपन-अपन गम्भीर विचार रखि सकैत अछि।

आब करहक बड़का होम-जाप आ महाभोज।

सभसँ फराक भऽ कऽ कालू मड़र मुँह बाबने ठाढ़ अछि। टक-टक आसमान दिस तकैत। मने-मन बिदबिदा रहल अछि। जेना कोनो मंत्र आसमानमे भेज रहल अछि। आकि कोनो देव-पितरसँ गप कऽ रहल अछि।

❍❍❍

''ढोढ़ाइ गुरुजीक भाय सिफैतकेँ नोत देबही तँ हमरा सभ भोज नै खेबौ।''

''ठीके, ओकरा बध लगल छै। ने पूजा पाठ केलक ने गंगा असलान केलक। तब पाँतमे बैसि कऽ खाएत। हम बरदाश नै कऽ सकै छी, ई गप। जाति आ धरमक गप अछि। एनामे तँ लोक बहैश जाएत।''

भोज होइसँ पहिले नोत दइकालमे दसगोटेसँ सलाह-विचार तँ करै पड़ै छै। भोजक सुगन्धसँ लोक चट दऽ जमो भऽ गेल। आपसी विचार करए लगै छै। हौ की भेल रहै? केना वध लगलै।''

''हौ हाटसँ साँझमे खरीद कऽ लाबने रहै। रातिमे बान्हले बड़द मरि गेलै।''

''हौ, कथीसँ खेती-पथारी करतै। बुझहक जे बजर खसि पड़लै।''

''बेमानीक टका-पैसासँ खरीदने हेतै।''

''बेचाराकेँ ऐबेर खेती मार भऽ जेतै।''

अजय ठाढ़ भऽ कऽ गप सुनैत छल। ओकरा नै रहल गेलै तँ बजल-

''ओकरा तँ दुख पड़ले छै। ऊपरसँ अहूँ सभ तँ परान खींचबाक लेल तैयारे छी।''

''आब सुनियो अजयक गप। ई ऐ टोलमे कोनो बन्हन नै रहए देतै। सभकेँ बिगारिकेँ छोड़ि देतै। एकोबेर इनसाफक बात नै करै छै।''

''इनसाफक गप हम नै करै छी। अहाँ लबकीकेँ बेटीक साथ इनसाफ केलिऐ? ओकर बेटी बीख खा कऽ मरि गेलै। के नै जनै छेलै जे ओकरा पेटमे कनफट्टा बनियाक बच्चा पलि रहल छै। कनफट्टा ओकरा सँगे जोर-जबरदस्ती केने रहै।''

''कहाँ गछलकै पंचैतीमे?''

“पंचैतीमे केतएसँ गछतै। ओइसँ पहिने कनफट्टा लोभ दऽ देलकै। जे हम तोरा संगे बिआह कऽ लेबौ। तोहर पलिबारक खरचा हम अपना दोकानसँ चलेबौ। ऐ कारणे लबकीक बेटी पंचैतीमे कनफट्टाकेँ बँचा लेलकै। पंचो सभ टाका-पैसा नेने रहै। सभ बातकेँ मटिया देलकै।”

“बादमे तँ सभ पंच लग गेल। पएर पकड़ि सभटा गप कहलक। अहाँ सभ कहाँ कऽ सकलौं-इनसाफ। उनटे ओकरा बेहया-बेश्या कहि कऽ दुतकारि देलिऐ। तब ने बेवश भऽ कऽ ओ बीख पीबि लेलकै। ओकर हतियाकेँ पाप केकरापर गेलै? केकरा वध लगलै?”

“हौ, हमरा सभ पिंगल पास थोड़े छी। दू आखर जे पढ़ि लेलक से आसमानेमे भूर करै छै।”

“हमरा सभ उनटा बजै छी की अहाँ सभ। सुकरातिक दिन जे सुगरक बच्चाकेँ मरखाहा भैंससँ खून करबा दैत छी, ओइ बच्चाकेँ भैंस रगड़ि-रगड़ि जान लैत रहै छै आ अहाँ सभ ताली मारैत खेंखियाइत रहै छी। भैंसकेँ घुमा-घुमा कऽ लबैत रहै छी। जे कहुना सुगरक बच्चाकेँ मारि दै। एकटा छोट जीवकेँ अपना सोझहामे जानि बूझि हत्या कराबैत काला अहाँ सबहक इनसाफ केतए चलि जाइत अछि। ओइ समैमे सभकेँ वध लगैत अछि की नै? सभकेँ वध लगल अछि। सभ जाउ गंगा-स्नान। अहाँ सभकेँ अन्दरमे वध करबाक प्रवृत्ति अछि।”

“हे रौ एकरा ऐठामसँ भगा। नै तँ सभकेँ नाश कऽ देतौ। केकरो बजै नै दैत छै।”

“यौ मड़र सबहक नाशसँ नीक जे एकटाकेँ नाश भऽ जाए। बहींचो..। एना कहुँ बजै छै।”

“फेर मुँह सम्हारि कऽ गप करू नै तँ ठीक कऽ देब।”

“हाँ, हाँ अस्थिर रहू। झगड़ा भऽ जाएत। हे रौ हटा दुनू गोटेकेँ।”

किछु गोटे दुनूकेँ ठेलि-ठालि कऽ हटा रहल अछि।

❍❍❍

चौबटियापर गाछ तर चारि-पाँच युवक गप हाँकि रहल अछि। जइमे सिंहेसरा, अजय, घनमा, उचितवक्ता ठाढ़ अछि आ दूटा छौड़ा कनी हटि कातमे फुसराहटि कऽ रहल अछि।

रामरती मड़रकेँ आगू दऽ कऽ जाइत देखि उचितवक्ताकेँ नै रहल गेलै।

‘‘बित्त भरिक बितबा, बितौसँ छोट, चलैत अछि बितवा टेरैत मोछ।’’

रामरती मड़र तमसा कऽ पाछू घुमि देखलक। गारि मुँहमे आबि गेल छेलै। छौड़ा सभकेँ बेसी संख्यामे देखि घुनघुनाइत चलि देलक।

‘‘बुढ़बा बड़ड तमसाह छै। घमण्डी नम्बर एक।’’

‘‘खूटा बले पररू डिरिया रहल छै। ऐ टोल परक जेतेक मुँहपुरुख अछि सभटा जीबू बाबू नै तँ अच्युतानन्दक गुलाम बनल अछि। तब ने झँपले-झाँपल ओकरे सबहक जूति-भाँति अहू टोलमे चलै छै।’’

‘‘गुलाम तँ सभ बनले रहितै। संयोगसँ पंजाब-दिल्ली कमेबाक रस्ता खूलि गेलै। सभकेँ आगाँ बढ़बाक रस्ता भेटि गेलै। लबका हवा-पानि लगलासँ बुधिक विकास भेलै। नै तँ आइओ बेगारमे गिरहत सभ जौड़ी बँटबाबैत, वाड़ीमे खटाबैत।’’

‘‘बेगार आइओ छै। खाली ओकर रूप बदलि गेलै। बुधिक विकास की हेतै। आइओ ऐ टोलक स्कूल मालिक टोलपर बनले छै। आ आहीमे बान्हल साँढ़ डिरिया रहल छै। बाँआँ-आँ।’’

‘‘नै यौ, एकरा विरोधमे एकता हेबाक चाही।’’

‘‘पहिले पढ़बहक तब ने, एकता करबहक। संघर्ष तँ आगाँक गप छिऐ। जड़िमे स्कूले पार भऽ गेल छै।’’

‘‘पनरह दिनपर मास्टर साहैब मुँहपुरुखक दलानपर आबि हाजरी बना लैत छै। सभटा मुँहपुरुख मास्टरकेँ दोस-महिम अछि।’’

‘‘हे यौ, लोक सभ तँ गाए-चरौनाइकेँ नीक बुझै छै। कहै छै पढ़लासँ की हेतै।’’

“हँ हँ। नम्हर भेलापर चोरि सीखतै।”

“मुदा भोजकेँ नीक बुझै छै। तब ने केते पलिवार भोजक कारणे सभ जमीन जथा बेचि देलकै।”

“हौ, सुनै छी जे फुलचनमा गबैया एकटा नचनियाँ छौड़ी संगे भागि गेलै केतौ। आरे तोरीकेँ उनटे बात।”

“नीक केलक। नटुआ मनोरथकेँ बूढ़मे खाइओपर आफत रहै छै।”

“गप तँ भँसिया गेलै। रामरती मड़र किएक खिसिया गेल छेलै?”

“हँ, बीत भरिक बीतबा। बुझलहक नै।”

“कहबहक तब ने बुझबै।”

“एकरा बापक नाम रहै- बिताय मड़र। भुट्टा आदमी आ बड़का-बड़का मोछ।”

“जमानाक गप कहै छहक।”

“हँ हौ सुनलाहा गप। एकर बाप बिताय मड़र चारि बरसक रहै। ओही समैमे बिआह करैले गेल रहै। रातिमे तेतेक कनलै जे भोरे माएकेँ जाए पड़लै। गामक कातमे जा कऽ बितायकेँ दूध पिऔलकै। मुदा बिआह भेलाक बाद निकललै बिताय। धोती-कुरता पहिरने। मोंछपर हाथ फेरैत। टेढ़िया चालि धेने। पाछाँमे साड़ी पहिरने छोटकी कनियाँ। कनियाँ-पुतरा सन।

ओही दिनसँ ई फकरा लोक कहै छै।

बीत भरिक बीतबा बितौसँ छोट। आइओ तँए ओकरा बेटाकेँ आँतमे लगि जाइ छै। आकि हेतै ओकरा बेटो बिआहमे सएह भेल।”

“की भेल छेलै। बुढ़बा मड़र कहै छेलै।”

“बिताय मड़र सोचलक अपना बेटाकेँ बिआहमे गलती नै करबै। धिया-पुतामे बिआह नै करबै। बेटा जुआन भऽ गेलै तँ लड़की ओकरा उमेरक भेटबे नै करै। लड़की जुआन घरमे राखतै तँ सभ कहतै- बुढ़िया बेटीकेँ घरमे कुमारे रखने छै। अन्तमे बिताय मड़र अपना बेटाकेँ कमे उमेरक लड़कीसँ बिआहलक। सभ कहै- बुढ़बा लड़िका केतएसँ उठा आनलकै। कनियाँ नैहर आएल तँ सासुर जेबाक लेल तैयारे नै होइ।

बुढ़बाकेँ बेटा झगड़ा करै। केतए कहाँ बिआह कऽ देलक। अन्तमे बिताय अपना भाए संगे समधीक घर पहुँचल। समधी घरसँ अनुपस्थित रहए। समधिन अँगनासँ समाद भेजलकै- अखनी हमर बेटी धिया-पुता छै। सासुर नै जाएत। खिसिया कऽ दुनू भाँइ आपस भेल। गामसँ बाहर भेलापर देखलक- जे ओकर पुतोहु साग तोड़ि रहल अछि। बिताय मड़रक भायकेँ ललकारा देलक-

“की देखैत छी लऽ चल ऐठामसँ उठा कऽ। फेर बारहटा बहाना करतौ। गामपर छौड़ा छुरी फनका रहल छै।

ललकारा सुनैत ओकर भाए कनियाँकेँ कन्हापर उठा लेलक। कनियाँ बाप-बाप चिचिया उठल। आवाज सुनि चारूभरसँ गौआँ दौगल। केतेक लाठी-फराठी दुनू भाँइक देहपर टुटलै पता नै। फेर पंचैती भेल। कनियाँ सासुर आएल। गर्भवती भेल। किन्तु बच्चा जन्मै काल माएकेँ खा गेल।”

“तँ ई खाम सनक औरतिया के छी यौ? सुनै छी जे मंतरसँ गाछ हँकै छै।”

“गप हँकै छी कि अकासमे भूर करै छी।”

“धुर, ई तँ चुमौनवाली लबकी छी।”

“हे रौ, भाग रौ रामरती मड़र फेर अबै छौ।”

सभ धड़फड़ा कऽ चलि देलक।

कौआ-मैनाक लड़ाइ शुरू भऽ गेल। जेकरा कियो नै देखलक किन्तु गाछ देखलक। आर बहुत किछु देखतो गाछ चुप्पे रहल।

❍❍❍

२३

धरमानन्द बाबूक दुआरिपर महाभारतक कथा भऽ रहल छै। कथा बाचककेँ हाव-भाव आ टहकार लोकक मनकेँ मोहि लैत छै। संगे भोज-भात सेहो हेतै।

"आइ दिन शुभ अछि। तब ने सरकारो शुभ दिनकेँ एलेक्सन करबा रहल छै।"

"भोँट खसबए लेल तँ हमरो जाए पड़त। पहिले किछु देर सुनि लैत छी। भोज सबेर होएत तँ खा-पीबि कऽ भोँट गिरबै ले जाएब।"

"अखनी तँ मालिक टोलक लोक लाइन लगा कऽ भोँट खसबैत हेतै।"

"हँ यौ, भोँट तँ ओही टोलक इसकूलमे गिरतै। ऐ टोलक इसकूल ओही टोलपर बनि गेलै।"

"इसकूलकेँ तँ गौशाला बना देने छै। बड़का लोकक धिया-पुता ओइमे पढ़ैत नै छै तँ की हेतै।"

धनुक टोलीक लोक धरमानन्द बाबूक दुआरिपर महाभारत कथा सुनि रहल छै।

"जुआ खेलैमे द्रोपदीकेँ हारि गेलै। पाण्डव सभ तामसे फनकि रहल छै। किन्तु बेवस छै। झूठक सहारा नै लऽ सकैत अछि। आब चीरहरण हेतै।"

अजय दू-तीन संगीकेँ संग नेने सभकेँ कहि रहल छै-

"हे यौ, भोँट गिरा लिअ। पाँच बरिसपर एहेन अवसर भेटै छै। अपना नेताकेँ चूनि लिअ।"

"के जाएत। एतए अमरीत वाणी बरिस रहल छै। भोँट तँ दू घंटा बादो गिराएल जाएत।"

धरमानन्द बाबूकेँ ऐबेर नेता सभ भोँटक लेल रूपैआ घूस नै देने छै।

छौड़ा सबहक आगू ताश पसरल छै। मुँहपुरुखक नाटक।

"मंडल नेता एलेक्सनमे ठाढ़ छै।"

“की जाति की पर-जाति। एलेक्सनक बाद तँ कोनो नेताकेँ दरशनो दुरलभ भऽ जाइ छै।”

“कोइ सरकार बनो। कुछो नै होइ छै। की भेलै पचासन बरिससँ।”

“हँ हँ, पहिले भोज खेबै तब भौँट गिराबै लेल जेबै। ऐबेर तँ कोनो फायदो नै छै।”

तीन बजेमे खा-पी कऽ सभटा धनुक टोलीकेँ लोक भौँट गिरबए लेल पहुँचल।

अच्युतानन्द बाबू आँखि उनटा कऽ तकैत अछि।

“एतेक लोक केतएसँ आबि गेलै।”

अच्युतानन्द बाबूक जेठका बेटा उचितवक्ताकेँ धकियबैत अछि।

“रे पाछू हट। तूँ भौँट गिरा नेने छीही।”

“हम तँ अखनी एबे केलौं, भौँट गिरा कऽ जाएब।”

“भाग, हमरा इसकुलपर सँ।”

“केकरो बापक इसकुल नै छिऐ।”

“सार, बापक नाम लैत छैँ। भेँट करा देबौ।”

“मार चारि चमेटा रौ।”

थप्पर-मुक्का चलए लगलै। अच्युतानन्द बाबूक इशारा पाबि पुलिसिया डण्टा बरिसए लगलै।

“फटाक... सटाक...।”

हड़विर्ड़ो मचि गेलै। लोक बाप-बाप चिचिया उठल। उचितवक्ता मारि खा कऽ बाहर निकलैत बाजल-

“ठीके कहै छेलै अजय। कियो बात नै मानलकै। तँए ओते भोज खेलक चेला बनि आ एते मारि खा कऽ महंथ भेल।”

दोगा-दोगी सभ भागि रहल अछि।

❍❍❍

सुरूज डुमल हो वा धरती घूमल हो। मुदा अन्हार तँ पसरल जा रहल छै। अन्हार भेलासँ पहिने शीला घर नै पहुँचतै तँ ओकर काका मारैत-मारैत चमड़ी खैंच लेतै। केना नै मारतै? जवान-जहान लोक अन्हार-धुन्हारमे घरसँ बाहर। अपन माए-बाप नै। ओकरा जन्मसँ पहिले बाप ओकर माएकँ राँड़-मसोमात बना कऽ उड़ि गेलै। शीला दस सालक भेलै तँ माए अनाथ बना कऽ संसारसँ भागि गेलै। काका-काकीक सहारासँ जिनगी कटि रहल छै। थप्पर-मुक्का चलब कोनो खास नै। लाठीक चोट आ दगनीक दाग पड़लै तब खास गप भेलै। भूख सहाज करै छेलै तँ देह दुबरा गेलै। समैपर खेलक तँ खायपेट्टी नै खेलक तँ भूखले रही कोढ़िनियाँ।

सभ दिनेसँ सिनेहक भूखल छेली बेचारी। बचपनेसँ अजय आ शीला गामक गली-कुचीमे खेलने छेलै। डोह-डबरामे नांगटे नहेने छेलै। एकर सभसँ नम्हर कारण दुनूक माए सखी जकाँ रहै छेलै। दुनूक बीच खूब मेल। एक दोसराक कनौनाइ आ हँसौनाइ चलै छेलै। खैर, ई छल बचपनक गप।

फेर जुआन भेलापर अजय शहर चलि गेल। आर ओतए अपन पढ़ाइ-लिखाइ पूरा करए लगल। कहियो काल छुट्टीमे गाम अबै छेलै तँ शीलासँ भेँट-मोलाकात भऽ जाइ छेलै। आ सुनहटमे बैसि कऽ दुखक कथा पसारि दइ छेलै। अजय बोल-भारोस दैत-दैत कखनो अपनो कानए लगै छेलै। परन्तु जखनि अजय शहर चलि जाइ छेलै तखनि शीला असगरे दुखक पोखरिमे डुमकी मारए लगै छेलै।

उज्जर आ कारी पाँखि फलकौने उड़ैत समए। लोकक उमेर बितैत छै आकि समए। परन्तु बितै तँ छै। कल्पना, यर्थात आकि दुनूक मिश्रण। समए सभकेँ नापैत। दौड़ैत-पड़ाइत आगू बढ़ैत। बेदरा, जुआन फेर बूढ़...।

गामक लगीचेमे धरमानन्द बाबूकँ दसकठबा करजान छै। छठि पावनिमे खौब आमदनी होइ छेलै। दसकट्ठाक केरा पावनिमे रूपैआ उझलि दइ छेलै। ओइसँ सटले डेढ़-दू बीघामे काश-पटेरक जंगल। बड़का-बड़का घास-पात। केतएसँ ओते जन-मजूर भेटतै। अदहा काटल आ अदहा लगले रहि जाइ छेलै।

एकबेर एकटा चीता बसेरा लऽ नेने रहै। डरे लोक साँझे टाटी-बेनाठी लगा लइ छेलै।

ओइ भूतहा जंगल लग अजय ठाढ़ छै। बाधसँ आपस जाइत शीलाकँ इशारासँ सोर पाड़ैत छै। शीला एने-ओने देखलक आ सट्ट दऽ करजानमे ढुकि गेल।

अजय पुछलकै-

“नेगरी जकाँ किएक चलै छी।”

“पएरमे कनी चोट लगि गेल रहए।”

“कथीसँ?”

“छोड़ू ने ऊ गप।”

“हमरासँ चोरा कऽ कोनो गप मनमे राखए चाहै छी। एकर मतलब हृदैसँ नै चाहै छी हमरा।”

“फेर अंट-शंट बाजि रहल छी।”

“ई भेलै अंट-शंट। अहाँ हमरा सोझाँमे झूठ बजब। एहेन हमरा विश्वास नै छल।”

शीला मुड़ी गोँति लेलक। ओकरा आँखिसँ दू बून नोर खसि पड़लै। बझाएल कंठसँ कहलकै-

“हमरा काकाकँ सुभाव तँ बुझते छी। चारि-पाँच दिन पहिले अहाँसँ गाछीमे भेँट भेल रहए। चुगला सभ चुगली कऽ देलकै। ई खबरि सुनिते काकाकँ देहमे आगि नेस देलकै। ई तँ लाठी पातर रहै जे टुटि गेलै। नै तँ हमहीं मरि जैतौं। देह हाथमे तँ कम चोट अछि मुदा जाँघक चोट...।”

अजय देखि रहल छै शीलाक जाँघ। गोर चमड़ीपर कारी सियाह दाग पड़ल। आँखिमे नोर रहबाक कारणे झलफलाह देखा रहल छै। खोंखीक आवाज सुनि दुनू भीतरी करजान दिस ससरि गेलै।

ओनए टोलपर दोसरे नाटक चालू भऽ गेल छेलै।

अजयकेँ दुश्मनोक संख्या बहुत छै। जइमे सभसँ आगू छै खेलावन भगत। मुँहपुरखी छिनबाक डर छेलै धरमानन्दकेँ ओहो दुसमन। ढोंढाइ गुरुजीकेँ डर छेलै जे अजय कहीं धिया-पुताकेँ पढ़बए ने लगै। कालू मैनजनकेँ बात नै मानलकै। भोज नै केलकै। तँए केतेको दुसमन। केतेक परोक्ष आ केतेक प्रत्यक्ष दुसमन।

दुसमनक बीचमे खबरि पहुँच गेल छेलै।

"अजैया आइ चोटपर चढ़ि गेल छौ।"

"अकलू मड़रकेँ सभसँ आगू राख। ओकरा भतीजीक इज्जत खराब कऽ रहल छै ने।"

अकलू मड़र तामससँ गरमा गेल छै।

"जँ इज्जते नै बँचतै तँ जी कऽ की करबै।"

अगिलगौना सभकेँ नीक मौका भेटि गेल छै।

"ई सरबा अपनाकेँ शहरी बुझै छै। देहातक इज्जतकेँ ऊ की जनतै। बेरा-बेरी सबहक इज्जत-परतिष्ठा बेरबाद कऽ देतौ।"

"हम तँ कहै छियौ। राफ-साफ कऽ दही-एक्केबेर। सीधे गरदनि काटि देबै। ने रहतै बाँस आ ने बजतै बौसली।"

सबहक भितरिया बाघ गरजए लगलै।

युद्ध करू वा देखू। भितरिया पियास मेटेबाक उपए।

भीड़-भाड़मे के केकरा देखै छै।

जेकरा जे हथियार हाथ लगलै, उठा लेलकै। लाठी-भाला, तीर-धनुष, गड़ाँस-फरसा जेना बनैया सुगरकेँ मारैत काल होइ छै। सभ एके संगे दौड़लै।

“खेलावन भगत खबरि देने छेलै केरा बगानमे दुनू रसलीला कऽ रहल छै।”

शीला आ अजय दोसरे संसारमे टहलि-बुलि रहल छेलै। अजय कहि रहल छेलै-

“अपन-अपन टोल, अपन-अपन जाति अलगे-अलग। तब ने अपन जूति चलतै। अन्हा गाममे कन्हा राजा। ऐठाम ज्ञान-विज्ञान निकलै छै- गहवर घरसँ। कानून निकलै छै-मुँहपुरुखक गपसँ। बहि रहल छै- उनटा बसात। सभसँ छोट उनचास हाथ।”

पैघ निसाँस लैत आगू बजल-

“करए पड़तै परिवर्त्तन। परिवर्त्तनक लेल कि जे किछो करए पड़ै। जिनगीओकेँ होम करए पड़ै तैयो ससते बुझू।”

“हो... हो... हो... लगे...।”

“भुक... भुक...।” टाँर्चक रोशनी।

कुत्ता कानि रहल अछि।

सुनहटकेँ चीरैत अवाज-

“घेर ले पूरा बगानकेँ आ काटि कऽ ओहीमे गाड़ि दबै।”

“चर-मर, खट-खट, धुम-धुम।” सैकड़ों पदचाप। सुनहटक निसाँस सन। अन्हारमे जेना भूत-प्रेत नाचैत-दौड़ैत...।

“बाप रे बाप। सबहक हाथमे हथियार छै। चारूभरसँ घेर रहल छै। जेना अपना सभ जानवर छी।”

स्वर थरथरा कऽ निकलैत अछि-

“भागू ऐठामसँ। खुनियाँ सभ आबि गेल।”

ऊँचगर माटिक ढूहपर देखिते शीला बोमिया कऽ कानए लगैत अछि।

“अहाँ भागि जाउ अजय। अहाँक जरूरत छै। हमरा कारणे अहूँक जान चलि जाएत।”

“अहाँकेँ छोड़ि हम असगरे भागि जाएब। हमरा एतेक डेरबुक बुझै छी। मरबै तँ संगे आ जीअब तँ संगे। हम कोनो अधलाह करम नै केने छी। हम भगबै नै, संघर्ष करबै। अंतिम साँस तक परिवर्त्तन आ प्रगतिक

लेल हमर संघर्ष जारी रहतै। हम लड़बै अपना बाँहक बलसँ। अन्हार निश्चित हटतै।''

''काश-पटेरक वन दिस भागू। जल्दी करू। खुनियाँ सभ पाछूमे चलि आएल।''

घनघोर अन्हार। काश-पटेर आ घास-पातक जंगल। पाछूमे मनुखक खूनसँ पियास मुझबैबला जानवर। भागैत-पड़ाइत दूटा प्राणी...।

''केतौ नै भेटै छै। ऐ काशमे नुकाएल छै।''

''रौ ठेकानि कऽ अन्दाजसँ तीर चला। जेतै केतए। आहीमे झड़का कऽ मारि देबै।''

''हँ, सूखल काश छै। आगि लगा दहक। ओहीमे डहि कऽ भसम भऽ जेतै।''

''आ जँ बहरा दिस भगतै तँ खुंडी-खुंडी काटि देबै। ठीके बात।''

डेढ़ दू बीघा काश आ घासक जंगलमे आगि लगा देलकै। धू-धू, चर-चर... चराक। चिड़ै-चुनमुनी, साँप-कीड़ा, केतेको जीव सभ जरि रहल अछि। लहाश आसमान दिस उठि रहल छै। धुइयाँसँ चारूभर भरि गेलै। गदमिसान भऽ रहल छै।

अजय आ शीला एम्हरसँ ओम्हर भागि रहल छै। पएर खुटी आ काँटसँ लहू-लहान। देह काश पटेरसँ कटल। सन-सनाइत एकटा तीर अजयक बाँहिमे भोंका गेलै। नोचि कऽ फेकलक अजय। बलबला कऽ खून बहए लगलै।

शीला कानैत बजली-

''हम नै जीअब आब। हमरा ऐ खूनसँ माँग भरि सकै छी अहाँ?''

समए कम छेलै, अजय हँसैत बाजल-

''लिअ खूनक सिनूर।''

भर भरा कऽ खूनक बून ओकरा माँगपर गिरल। पाछाँसँ साड़ीमे आगि लगि गेल। अजय ओकर साड़ी खोलि कऽ फेंकि देलक। आगू भागल तावत अजयकँ नुआ-वस्तरमे आगि पकड़ि लेलक। ओहो अपना

सभ कपड़ा-बस्तर फाड़ि कऽ फेकि देलक। दुनू वस्त्रहीन। खूनसँ भीजल देह। चारूभरसँ आगिक लपट। बँचबाक कोनो उपए नै। तैयो भागैत-पड़ाइत। एक दोसराक सहारा दैत। झोंझमे एकटा चभच्चा देखाए पड़लै। डबरा सन गहींरगर पानिसँ भरल। चारूभर कुकुआहा उड़ैत। आगिक झड़क। उठैत लपट। धुइयाँसँ आन्हार भेल आँखि। जान बचेबाक लेल दुनू ओइ चभच्चामे 'छपाक' कूदि गेल।

कनीकाल हलचल फेर एक-दोसराकेँ आँखिमे देखैत दुनू शान्त।

ईहो काल गुजरि जेतै निश्चित। धैर्य... पैघ प्रतीक्षा... साक्षी। दुनूक देह, मन आ चित्त अपन-अपन काज कऽ रहल अछि।

धर्मडीहीवाली चिचिया कऽ अपन पति जागेसरकेँ कहलकै-

"लाज नै होइ छै। सभ गोटे मिलि कऽ सहोदरा भायकेँ झड़का रहल छै आ ई मुड़ी गोंति कऽ बैसल छै। गे माइ गे माइ। आइ हमहीं मरि जेबै आकि सभकेँ मारि देबै।"

कहैत चारमे सँ 'सड़ाक' हँसुआ खींचलक आ केंकिहारि काटैत केलवनी दिस दौगल अेकरा पाछू जगेसरा लाठी नेने बमकि रहल अछि। पाछू लगल आर स्त्रीगण सभ। चारू भरक गौआँ-घरूआ गगनचुम्मी धधरा देखि दौड़ल आबि रहल छै।

अजय आ शीलाक हँसी आसमानक अट्टहासमे सम्मलित भऽ रहल अछि। आगिक बीचमे पानि आ ओइ पानिमे हजारो जीव-जन्तु। ओइ बीचमे शीला आ अजय पूर्ण नग्न एक दोसराकेँ आलिंगनमे कसने ठाढ़ अछि। अन्त नै अनन्त... परिवर्त्तन आ विकास हेतु...।

❍❍❍

परिचए-पात : राजदेव मंडल

जन्म : १५ मार्च १९६० ईं.मे।
पिता : स्व. सोनेलाल मंडल उर्फ सोनाइ मंडल।
माता : स्व. फूलवती देवी।
पत्नी : श्रीमती चन्द्रप्रभा देवी।
पुत्र : निशान्त मंडल, कृष्णकान्त मंडल, विप्रकान्त मंडल।
पुत्री : रश्मि कुमारी।
मातृक : बेलहा (फुलपरास, मधुबनी)
मूलगाम : मुसहरनियाँ, पोस्ट- रतनसारा, भाया- निर्मली, जिला- मधुबनी।
बिहार- ८४७४५२
मोबाइल : ९१९९५९२९२०
शिक्षा : एम.ए. (मैथिली, हिन्दी, एल.एल.बी)
सम्मान : राजदेव मण्डलकेँ अम्बरा (कविता संग्रह) लेल विदेह भाषा सम्मान २०१२-१३ (वैकल्पिक साहित्य अकादेमी पुरस्कार रूपेँ प्रसिद्ध) क मूल पुरस्कार **२०१२** भेटल छन्हि।
ई पत्र : rajdeokavi@gmail.com
प्रकाशित कृति :
(१) अम्बरा- कविता संग्रह (२०१०)
(२) बसुंधरा कविता संग्रह (२०१३)
(३) हमर टोल- उपन्यास (२०१३)